किताबुत तौहीद

जो बंदों पर अल्लाह का अधिकार है

लेखक:

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

1206 हिजरी

तत्वावधान :

अब्दुल अज़ीज़ बिन दाख़िल अल - मुतैरी

किताबुत तौहीद

जो बंदों पर अल्लाह का अधिकार है

लेखकः

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

1206 हिजरी

तत्वावधान

अब्दुल अज़ीज़ बिन दाख़िल अल-मुतैरी

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

किताबुत तौहीद
2

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] : {وما خَلَقْتُ الجنَّ وَالإنسَ إلاَّ لِيَعْبُـدونِ} ([illegible]) [[illegible]-[illegible] : 56]

[illegible] : {ولقدْ بَعَثْنا فِي كلِّ أمَّةٍ رَّسولاً أنِ اعبدُوا اللهَ واجتَنِبُـوا الطَّاغوتَ} ([illegible] ([illegible]) [illegible]) [[illegible]-[illegible] : 36]

[illegible] : {وَقَضَى رَبُّكَ ألاَّ تَعبُدُوا إلاَّ إيَّاهُ وبالوالـدَيْنِ إحْسَـانًا إمَّا يَبْلُغَنَّ عنـدَكَ الكِبَـرَ أحَـدُهُمَا أوكِلاهُمَـا فلا تَقُـلْ لهمـا أُفٍّ وَلا تَنْهَرْهُمَـا وقُـل لهمـا قـولاً كَرِيمًـا، واخْفِضْ لهمـا جَنَـاحَ الـذُّلِّ مِن الرَّحمَـةِ وقُـل رَّبِّ ارْحَمْهُمـا كَمَـا رَبَّيَاني صَغِيرًا} ([illegible])

[illegible]! [illegible], [illegible]) [illegible]-[illegible] : 23-24]

[illegible] : {[illegible]} [illegible]-[illegible] : 36]

[illegible] : {قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ ما حرَّم رَبُّكم عليكم ألاَّ تُشرِكوا بهِ شَـيْئًا وبالوَالِـدينِ إحسَـانًا ولا تقتلُـوا أولادَكُمْ مِنْ إمْلاقٍ نحنُ نَرْزُقُكُمْ وإيَّاهُم وَلا تَقْرَبُوا الفَوَاحِشَ مَا ظَهَـرَ مِنهـا ومَا بَطَنَ وَلا تقتلُوا النَّفسَ الَّتِي حَرَّم اللهُ إلاَّ بالحَقِّ ذلِكُمْ وَصَّـاكُم بـــهِ لَعَلَّكُمْ تَعقِلُـــونَ) [illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible]? [illegible], [illegible]-[illegible] ([illegible]) [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] وَلا تَقْرَبُـوا مَـالَ اليَتِيمِ إلاَّ بِـالَّتي هِيَ أحسَـنُ حَتَّى يَبْلُـغَ أشُدَّهُ وَأوفُوا الكَيلَ وَالمِـيزَانَ بِالقِسْـطِ لا نُكَلِّفُ نَفْسًـا إلاَّ وُسْـعَها وإذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَو كَانَ ذَا قُرْبَى وَبِعهدِ الله أَوفُوا ذَلِكُمْ وَصَّاكُمْ

بهِ لَعَلَّكُمْ تَـذَكَّرُونَ

وأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُستَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلا تَتَّبِعـوا السُّـبُلَ فَتَفَـرَّقَ بِكُمْ عَن سَبيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّاكُم بـهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُـونَ

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ ما حرَّم رَبُّكم عليكم ألاَّ تُشرِكوا بـهِ شَـيْئًا

{وأَنَّ هذا صِراطي مُستَقيمًا} :

किताबुत तौहीद 2

الآيَةَ (तथा (आप उनसे यह कहें कि) ये (इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह है।) पूरी आयत देखें।

तथा मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है , वह कहते हैं कि मैं एक गधे पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे बैठा था , तो आपने मुझसे पूछा : "मुआज़ , क्या तुम जानते हो कि बंदों पर अल्लाह के तथा अल्लाह पर बंदों के क्या अधिकार हैं ?" मैंने कहा : अल्लाह तथा उसके रसूल को अधिक ज्ञान है। आपने फ़रमाया : "बंदों पर अल्लाह का अधिकार यह है कि वे उसकी उपासना करें तथा किसी भी वस्तु को उसका साझी न बनाएँ , एवं अल्लाह पर बंदों का अधिकार यह है कि जो उसके साथ किसी भी वस्तु को उसका साझी न बनाए , उसे वह दंड न दे। '' मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल , लोगों को यह खुशखबरी दे दूँ ? आपने फ़रमाया : ''नहीं , वरना लोग इसी पर भरोसा कर बैठ जाएँगे। " इसे इमाम बुख़ारी एवं इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : इनसानों तथा जिन्नों की सृष्टि की हिकमत बताई गई है।

दूसरी : इबादत से अभिप्राय तौहीद (एकेश्वरवाद) है , क्योंकि सदा से विवाद इसी के विषय में रहा है।

किताबुत तौहीद 2

तीसरी : जिसने एकेश्वरवाद का पालन नहीं किया, उसने अल्लाह की इबादत ही नहीं की। यही अल्लाह के इस कथन : {وَلاَ أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ} (और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो, जिसकी मैं इबादत करता हूँ।) का अर्थ है।

चौथी : रसूलों को भेजने की हिकमत भी बातई गई है।

पाँचवीं : अल्लाह की ओर से हर समुदाय की ओर रसूल भेजे गए।

छठी : सारे नबियों का धर्म एक ही है।

सातवीं : एक महत्वपूर्ण बात यह मालूम हुई कि ताग़ूत का इनकार किए बिना अल्लाह की इबादत होगी ही नहीं। यही अल्लाह के इस कथन का अर्थ है : {فَمَن يَكْفُرْ بالطَّاغوت ويـؤمن بالله} (जो ताग़ूत का इनकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए) पूरी आयत देखें।

आठवीं : ताग़ूत शब्द के अंतर्गत हर वह वस्तु आती है, जिसकी अल्लाह के सिवा उपासना की जाती हो।

नवीं : सलफ़ (सदाचारी पूर्वजों) के निकट सूरा अनआम की उपरोक्त तीन मुहकम (स्पष्ट) आयतों का महत्व, जिनमें दस मसायल हैं और उनमें से पहला मसला है शिर्क से मनाही।

दसवीं : सूरा अल-इसरा की मुहकम आयतों में अल्लाह ने अठारह बातें बयान की हैं, जिनका

لا تجعلْ معَ الله} : ((إلهًا آخرَ فتقعدَ مذمومًا مخذولاً {
وَلاَ تَجْعَـلْ مَـعَ اللـهِ إِلَهًـا آخَـرَ فَتُلْقَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًـا} : {
مَدْحُورًا}
ذلكَ مما أوحَى إليكَ ربُّكَ مِنَ الحِكْمَةِ} {
وَاعْبُدُوا اللهَ ولاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا} : {

किताबुत तौहीद 2

पंद्रहवीं : इससे पहले अकसर सहाबा बंदों पर अल्लाह के अधिकारों और अल्लाह पर बंदों के अधिकारों से अवगत नहीं थे।

सोलहवीं : किसी मसलहत के कारण ज्ञान को छुपाना जायज़ है।

सत्रहवीं : मुसलमान को खुशख़बरी देना मुसतहब (जिस कार्य पर पुण्य मिले पर वह अनिवार्य न हो) है।

अठारहवीं : अल्लाह की असीम कृपा पर भरोसा कर बैठ जाने से सावधान किया गया है।

उन्नीसवीं : जब इनसान को प्रश्न का उत्तर मालूम न हो , तो उसे "अल्लाह तथा उसके रसूल को अधिक ज्ञान है " कहना चाहिए।

बीसवीं : कुछ लोगों को विशेष रूप से कुछ सिखाना और अन्य लोगों को न सिखाना जायज़ है।

इक्कीसवीं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विनम्रता कि आप गधे की सवारी करते थे तथा उसपर सवारी के समय अपने पीछे किसी को बिठा भी लेते थे।

बाईसवीं : जानवर पर सवारी करते समय किसी को पीछे बिठाने की जायज़ है।

तेईसवीं : मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता)।

चौबीसवीं : एकेश्वरवाद का महत्व।

किताबुत तौहीद
2

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : एकेश्वरवाद की फ़ज़ीलत तथा उसका तमाम गुनाहों के मिटा देना

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {الَّذِينَ ءامَنُــواْ وَلَمْ يَلْبِسُــواْ إِيمَـــانَهُم بِظُلْمٍ أُولَئِكَ لَهُمُ الأَمنُ وَهُم مُّهتَـدُونَ} (जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को अत्याचार (शिर्क) से लिप्त नहीं किया, उन्हीं के लिए शांति है तथा वही सही राह पर हैं।) [सूरा अन-आम : 82]

उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिसने इस बात की गवाही दी कि एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं तथा उसका कोई साझी नहीं है, मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, ईसा भी अल्लाह के बंदे, उसके रसूल तथा उसके शब्द हैं, जिसे उसने मरयम की ओर डाला था एवं उसकी ओर से भेजी हुई आत्मा हैं तथा जन्नत और जहन्नम सत्य हैं, ऐसे व्यक्ति को अल्लाह जन्नत में दाख़िल करेगा, चाहे उसके कर्म जैसे भी रहे हों।" इस हदीस को बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है तथा बुख़ारी व मुस्लिम ही के अंदर इतबान रज़ियल्लाहु अन्हु की ह़दीस में है : "अल्लाह ने आग पर उस व्यक्ति को हराम कर दिया है, जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे।"

किताबुत तौहीद

2

और अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "मूसा ने अल्लाह से कहा : ऐ मेरे रब ! मुझे कोई ऐसी वस्तु सिखा दे , जिससे तुझे याद करूँ तथा तुझे पुकारूँ। अल्लाह ने कहा : ऐ मूसा ! कहो , 'ला इलाहा इल्लल्लाह '। मूसा ने कहा : यह तो तेरे सारे बंदे कहते हैं। अल्लाह ने कहा : ऐ मूसा ! अगर मेरे सिवा सातों आसमानों तथा उनके अंदर रहने वालों और सातों ज़मीनों को तराज़ू के एक पलड़े में रख दिया जाए और 'ला इलाहा इल्लल्लाह ' को दूसरे पलड़े में रखा जाए , तो 'ला इलाहा इल्लल्लाह ' का पलड़ा उनके पलड़े से वज़नी होगा। " इस हदीस को इब्ने हिब्बान तथा हाकिम ने रिवायत किया है और हाकिम ने इसे सहीह कहा है।

तिरमिज़ी की एक ह़दीस में -जिसे तिरमिज़ी ने ह़सन कहा है - अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है : "उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया : ऐ आदम की संतान , यदि तू मेरे पास ज़मीन भर गुनाह लेकर आए , पर तू ने किसी वस्तु को मेरा साझीदार न ठहराया हो , तो मैं तेरे पास ज़मीन भर क्षमा लेकर आऊँगा। "

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : अल्लाह विशाल अनुग्रह का मालिक है।

किताबुत तौहीद
2

दूसरी : अल्लाह एकेश्वरवाद का पुण्य प्रचुर मात्रा में प्रदान करता है।

तीसरी : उसके साथ -साथ गुनाहों को भी मिटाताा है।

चौथी : सूरा अल -अनआम की आयत की तफ़सीर (व्याख्या)।

पाँचवीं : उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में उल्लिखित पाँच बातों पर विचार करना चाहिए।

छठी : जब आप इस अध्याय की हदीसों पर एक साथ विचार करेंगे , तो आपके सामने "ला इलाहा इल्लल्लाह " का सटीक अर्थ स्पष्ट हो जाएगा एवं धोखे में पड़े हुए लोगों की ग़लती का भी पता चल जाएगा।

सातवीं : इतबान रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में उल्लिखित शर्त की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है।

आठवीं : नबियों को भी इस बात की ज़रूरत है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह " की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया जाए।

नवीं : इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना कि "ला इलाहा इल्लाल्लाह " का पलड़ा सारी मख़लूक़ से भी भारी है। लेकिन इसके बावजूद "ला इलाहा इल्लल्लाह " कहने वाले बहुत -से लोगों का पलड़ा हलका रहेगा।

किताबुत तौहीद 2

दसवीं : इस बात का स्पष्ट वर्णन कि आसमानों की तरह ज़मीनें भी सात हैं।

ग्यारहवीं : साथ ही उनके अंदर मख़लूक़ भी आबाद हैं।

बारहवीं : इस बात का सबूत के अल्लाह के गुण हैं, जबकि अशअरी पंथ के लोग ऐसा नहीं मानते।

तेरहवीं : जब आप अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से अवगत हो जाएँगे, तो समझ जाएँगे कि इतबान रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शब्द "अल्लाह ने आग पर उस व्यक्ति को हराम कर दिया है, जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे।" का अर्थ केवल ज़बान से इन शब्दों को अदा करना नहीं, बल्कि शिर्क का परित्याग है।

चौदहवीं : इस बात पर ग़ौर करें कि अल्लाह ने ईसा तथा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिमा व सल्लम) दोनों को अपना बंदा एवं रसूल कहा है।

पंद्रहवीं : इस बात की जानकारी कि विशेष रूप से ईसा अल्लाह का शब्द हैं (यानी अल्लाह के शब्द 'हो जा' द्वारा अस्तित्व में आए थे)।

सोलहवीं : इस बात की जानकारी कि वे अल्लाह की ओर से भेजी गई एक आत्मा हैं।

किताबुत तौहीद 2

सत्रहवीं : इससे जन्नत व जहन्नम पर ईमान लाने की फज़ीलत मालूम होती है।

अठारहवीं : इससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन ''चाहे उसका अमल जो भी हो '' का अर्थ भी स्पष्ट होता है।

उन्नीसवीं : इस बात का ज्ञान होता है कि तराज़ू (जो क़यामत के दिन बंदों के कर्म तौलने के लिए रखा जाएगा) के दो पलड़े होंगे।

बीसवीं : इस बात की जानकारी मिली कि अल्लाह के चेहरे का उल्लेख हुआ है।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : तौहीद का पूर्णतया पालन करने वाला बिना हिसाब के जन्नत में प्रवेश करेगा

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {إِنَّ إِبْـرَاهِيمَ كَـانَ أُمَّةً قَانِتًـا للـهِ حَنِيفًـا وَلَمْ يَـكُ مِنَ الْمُشْـرِكِينَ} (वास्तव में, इब्राहीम अकेले ही एक समुदाय, अल्लाह का आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी था और वह अनेकेश्वरवादी नहीं था।) [सूरा नह्ल : 120]

एक अन्य स्थान में उसका फ़रमान है : {وَالَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لاَ يُشْرِكُونَ} (और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।) [सूरा अल-मोमिनून : 59]

और हुसैन बिन अब्दुर रहमान से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैं सईद बिन जुबैर के पास था कि इसी दौरान उन्होंने पूछा : रात को जो तारा टूटा था उसे तुममें से किसने देखा है? मैंने कहा : मैंने देखा है। फिर मैंने कहा : परन्तु मैं नमाज़ में नहीं था, बल्कि मुझे किसी चीज़ ने डस लिया था। उन्होंने पूछा : तो तुमने क्या किया? मैंने कहा : (आयतें आदि पढ़कर) खुद को फूँक मारी। उन्होंने पूछा : तुमने ऐसा क्यों किया? मैंने कहा : इस बारे में मैंने शाबी से एक हदीस सुनी है। उन्होंने फिर सवाल किया : कौन-सी हदीस? मैंने कहा : उन्होंने हमसे बयान किया कि बुरैदा बिन हुसैब ने फ़रमाया है : "बुरी नज़र लगने अथवा डसे जाने पर ही रुक़या (कोई

किताबुत तौहीद 2

आयत या दुआ पढ़कर फूँक मारना) किया जाएगा। " उन्होंने फ़रमाया : यह अच्छी बात है कि किसी ने जो कुछ सुना उसके अनुसार अमल भी किया। परन्तु इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमसे बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "मेरे सामने तमाम उम्मतों (समुदायों) को पेश किया गया , तो मैंने किसी नबी के साथ एक समूह और किसी के साथ एक दो व्यक्ति देखा और किसी नबी के साथ किसी को भी नही पाया। इसी दौरान मेरे सामने एक बहुत बड़ा दल प्रकट हुआ। मैंने सोचा कि वे मेरी उम्मत के लोग हैं। परन्तु मुझसे कहा गया कि यह मूसा तथा उनकी उम्मत के लोग हैं। फिर मुझे एक बड़ा समूह नज़र आया और मुझे बताया गया कि यह तुम्हारी उम्मत के लोग हैं एवं इनके साथ सत्तर हज़ार ऐसे लोग हैं , जो बिना हिसाब तथा अज़ाब के जन्नत में प्रवेश करेंगे। " फिर आप उठे एवं अपने घर में प्रवेश किया। इधर लोग उन लोगों के बारे में बातचीत करने लगे। किसी ने कहा : संम्भवतः वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी हैं , तो किसी ने मत प्रकट किया कि शायद यह वे लोग हैं जिनका जन्म इस्लाम में हुआ और उन्होंने अल्लाह के साथ किसी प्रकार का कोई शिर्क नहीं किया। उनके बीच कुछ और बातें भी हुईं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बाहर आए , तो लोगों ने उन्हें इन बातों की सूचना दी , तो आपने फ़रमाया : "ये वे लोग हैं

किताबुत तौहीद 2

जो न किसी से झाड़-फूँक कराते हैं, न (इलाज के लिए) अपना शरीर दग़वाते हैं और न अपशकुन लेते हैं, बल्कि अपने रब पर ही भरोसा करते हैं।" तब उक्काशा बिन मिहसन खड़े हुए और बोले : ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह से दुआ करें कि वह मुझे उन लोगों में से कर दे। आपने फ़रमाया : "तुम उन्हीं में से हो।" फिर एक और व्यक्ति खड़ा हुआ और निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह से दुआ करें कि वह मुझे भी उन लोगों में से कर दे, तो आपने फ़रमाया : "उक्काशा तुमसे आगे निकल गए।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : इस बात की जानकारी कि तौहीद के मामले में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ होती हैं।

दूसरी : इस बात का ज्ञान कि पूर्णतया तौहीद के पालन का अर्थ क्या है?

तीसरी : अल्लाह की ओर से इबराहीम की इस बात के साथ प्रशंसा कि वे मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं थे।

चौथी : अल्लाह की ओर से औलिया-ए-किराम की इस बात पर प्रशंसा कि वे शिर्क (अनेकेश्ववरवाद) से सुरक्षित थे।

पाँचवीं : झाड़-फूँक तथा दग़वाने का परित्याग भी तौहीद के संपूर्ण अनुपालन में दाख़िल है।

किताबुत तौहीद 2

छठी : इन विशेषताओं से सुशोभित होने का नाम ही तवक्कुल यानी अल्लाह पर संपूर्ण भरोसा है।

सातवीं : सहाबा का ज्ञान बड़ा गहरा था , क्योंकि वे जानते थे कि उन्हें कर्म का बिना वह स्थान प्राप्त नहीं हो सकता।

आठवीं : भली चीज़ों के प्रति उनकी वे उत्सुक रहा करते थे।

नवीं : संख्या तथा गुण दोनों तबार से इस उम्मत की श्रेष्ठता।

दसवीं : मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों की श्रेष्ठता।

ग्यारहवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उम्मतों का पेश किया जाना।

बारहवीं : क़यामत के दिन हर उम्मत (समुदाय) को अलग-अलग उसके नबी के साथ एकत्र किया जाएगा।

तेरहवीं : जिन लोगों ने नबियों का आह्वान स्वीकार किया , उनकी संख्या हमेशा कम रही है।

चौदहवीं : जिस नबी का अनुसरण किसी ने नहीं किया , वे अकेला ही उपस्थित होगा।

पंद्रहवीं : इससे यह मालूम हुआ कि अधिक संख्या पर अभिमान और कम संख्या से परेशान नहीं होना चाहिए।

किताबुत तौहीद 2

सोलहवीं : बुरी नज़र लगने तथा डंसे जाने पर दम करने की अनुमति है।

सत्रहवीं : सलफ़ (सदाचारी पूर्वजों) का ज्ञान बड़ा गहरा हुआ करता था। क्योंकि सईद बिन जुबैर ने कहा : "यह अच्छी बात है कि किसी ने उसी के अनुसार अमल किया जो उस ने सुना, लेकिन और एक बात का ध्यान रखना चाहिए।" इससे यह मालूम हुआ कि पहली हदीस दूसरी हदीस की मुख़ालिफ़ नहीं है।

अठारहवीं : सलफ़ (सदाचारी पूर्वज) किसी की झूठी प्रशंसा से रहते थे।

उन्नीसवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान कि "तुम उन्हीं में से हो" आपके नबी होने का एक प्रमाण है।

बीसवीं : उक्काशा रज़ियल्लाहु अन्हु की श्रेष्ठता।

इक्कीसवीं : इशारे-इशारे में बात करने की अनुमति।

बाईसवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सदव्यवहार।

: على من هذا الشرك

وهذا الشرك الذي وقع فيه من وقع فيه : {إِنَّ اللهَ لاَ يَغْفِـرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَـاءُ} (,) [: 48]

وفي قوله عن إبراهيم عليه السلام : {وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَّعْبُدَ الأَصْـنَامَ} (,) [: 35]

قال ابن, كان قال : "هذه الأصنام أضل كثيرا من الناس, فمن عبدني فإنها, فإنه منهم" هذه هذه هذه قال, فإن الأصنام "هذه أضلت كثيرا من"

قال الشيخ عبد الله أبا بطين رحمه الله في (الدرر السنية) في : "قال العلماء في قوله في قوله قال قال في قوله في قوله أضلت كثيرا قال, في قوله قال أضلت" في هذه في هذه الأصنام العلماء قال أضلت كثيرا من الناس في قوله في في قوله في هذه الأصنام الدرر السنية) في : "في

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

: [illegible]

قُلْ} : [illegible] هَـذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللهِ عَلَى بَصِـيرَةٍ أنَـا ومَنِ اتَّبَعَنِي وسُـبحَانَ اللهِ ومَا أنَا مِنَ المُشرِكِينَ {((!) [illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

को मुश्रिकों से दूर रहने की शिक्षा दी गई है, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह उनमें से हो जाए, यद्यपि शिर्क न करता हो।

सातवीं : तौहीद इनसान का पहला कर्तव्य है।

आठवीं : आह्वानकर्ता हर चीज़ यहाँ तक कि नमाज़ से पहले भी तौहीद की ओर बुलाएगा।

नवीं : मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अनहु की हदीस में प्रयुक्त शब्द "सबसे पहले उन्हें केवल अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना" का अर्थ वही है, जो ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने के अंदर निहित है।

दसवीं : कभी-कभी इनसान अह्ल-ए-किताब में से होता है, लेकिन वह इस गवाही का अर्थ नहीं जानता या फिर जानता भी है तो उसपर अमल नहीं करता।

ग्यारहवीं : इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है कि शिक्षा धीरे-धीरे और क्रमवार देनी चाहिए।

बारहवीं : साथ ही शिक्षा देते समय अति महत्वपूर्ण से कम महत्वपूर्ण की ओर आने के क्रम का ख़याल रखना चाहिए।

तेरहवीं : ज़कात खर्च करने के स्थान बता दिया गया है।

किताबुत तौहीद
2

चौदहवीं : गुरू को शिष्य के संदेहों को दूर करना चाहिए।

पंद्रहवीं : (ज़कात वसूल करते समय) उत्तम धनों को लेने से बचने का आदेश दिया गया है।

सोलहवीं : मज़लूम की बददुआ से बचने का आदेश दिया गया है।

सत्रहवीं : यह बताया गया है कि मज़लूम की बददुआ के सामने कोई सुकावट नहीं होती।

अठारहवीं : नबियों के सरदार तथा दूसरे अल्लाह के नेक बंदों को जो कष्ट , भूख तथा रोग आदि से गुज़रना पड़ा है , वह सभी तौहीद के प्रमाणों में से हैं।

उन्नीसवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बात कि "कल मैं झंडा दूँगा एक ऐसे व्यक्ति को दूँगा ..." आपके नबी होने की निशानियों में से है।

बीसवीं : इसी प्रकार अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आंखों में थूक का प्रयोग करना भी आपके नबी होने की निशानियों में से है।

इक्कीसवीं : अली रज़ियल्लाहु अन्हु की श्रेष्ठता।

बाईसवीं : सहाबा -ए-किराम की फ़ज़ीलत कि वे विजय की खुशखबरी भुलाकर उस रात बस यह सोचते रहे कि झंडा किसे मिल सकता है ?

किताबुत तौहीद 2

तेईसवीं : तक़दीर (भाग्य) पर ईमान का सबूत। क्योंकि यह फ़ज़ीलत उन्हें मिल गई , जिन्होंने इसे पाने का कोई प्रयास ही नहीं किया था और जिन्होंने प्रयास किया , उन्हें नहीं मिली।

चौबीसवीं : आपके फ़रमान : ''तुम आराम से जाना " में निहित शिष्टाचार।

पच्चीसवीं : युद्ध से पहले इस्लाम की ओर बुलाया जाएगा।

छब्बीसवीं : ऐसा उन लोगों के साथ भी किया जाएगा , जिन्हें इससे पहले इस्लाम की ओर बुलाया जा चुका हो एवं जिनसे युद्ध भी किया जा चुका हो।

सत्ताईसवीं : इस्लाम की ओर बुलाने का कार्य हिकमत के साथ होना चाहिए , क्योंकि आप अल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है : "उन्हें बता देना कि उनके कर्तव्य क्या किया हैं। "

अठाईसवीं : इस्लाम में अल्लाह के अधिकार की जानकारी दी गई है।

उन्तीसवीं : जिसके हाथों एक व्यक्ति को भी सच्चा मार्ग मिल जाए उसे मिलने वाले पुण्य का बयान।

तीसवीं : फ़तवा देते समय क़सम खाने के उचित होने का सबूत।

किताबुत तौहीद

2

: الدليل من القرآن على أن الله واحد

الدليل من القرآن على أن الله واحد : { أُولَـئِكَ الَّذِينَ يَـدْعُونَ يَبْتَغُـونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِـيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْـرَبُ وَيَرجُونَ رَحْمَتَـهُ ويَخـافُونَ عَذَابَـهُ إِنَّ عـذابَ رَبِّكَ كَـانَ مَحـذُورًا} (الدليل من, القرآن على أن الله واحد, هو أن الله تعالى أخبر عن الأنبياء الذين كانوا يدعون من دون الله أنهم يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه فكيف يكون هؤلاء آلهة? هل يكون الإله إلا من كان غنيا عن كل شيء وكل شيء فقير إليه, وكل شيء تحت قهره وسلطانه) [سورة الإسراء : 57]

وَإِذْ} : هو الدليل الذي يدل على أن الله واحد هو : {قَـالَ إِبْـرَاهِيمُ لأَبِيـهِ وَقَوْمِـهِ إِنَّنِي بَـرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُـدُونَ (الزخرف) (الدليل) على أن الله واحد هو أن الله تعالى أخبر عن إبراهيم عليه السلام أنه قال لأبيه وقومه : إِلاَّ الَّذِي فَطَرَنِي الذي خلقني, فإنه سَـيَهدِيْنِ فإنه سيهدين وجعلها كلمة باقية في عقبه لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُـونَ {كَلِمَـةً بَاقِيَـةً فِي عَقِبِـهِ لعلهم يرجعون (الزخرف) على أن الله واحد هو أن الله تعالى أخبر عن الأنبياء الذين كانوا يدعون من دون الله أنهم يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه فكيف يكون هؤلاء آلهة? هل يكون الإله إلا من كان غنيا عن كل شيء وكل شيء فقير إليه, وكل شيء تحت قهره وسلطانه) [سورة الزخرف : 26-28]

اتَّخَذُواْ أَحْبَارَهُمْ} : هو الدليل على أن الله واحد هو : وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللـهِ وَالمَسِـيحَ ابنَ مَـرْيَمَ ومَـا أُمِـرُوا إلاَّ لِيَعبُـدُوا إِلَهًـا وَاحِـدًا لا إلـهَ إلاَّ هُـوَ سُـبْحَانَهُ عَمَّا يُشْـرِكُونَ (الدليل على أن الله واحد هو أن الله تعالى أخبر عن الأنبياء الذين كانوا يدعون من دون الله أنهم يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه فكيف يكون هؤلاء آلهة? هل يكون الإله إلا من كان غنيا عن كل شيء وكل شيء فقير إليه, وكل شيء تحت قهره وسلطانه)

किताबुत तौहीद
2

(संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य बना लिया तथा मर्यम के पुत्र मसीह को , जबकि उन्हें जो आदेश दिया गया था , वो इसके सिवा कुछ न था कि वे एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है , परन्तु वही। वह उससे पवित्र है , जिसे वे उसका साझी बना रहे हैं।) [सूरा तौबा : 31]

एक और जगह उसका फ़रमान है : {وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللـــهِ وَالَّذِينَ ءامَنُـوا أَشَـدُّ حُبًّا لِّلَّه} (कुछ लोग ऐसे भी हैं , जो अल्लाह का साझी औरों को ठहराकर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं , जैसा प्रेम वे अल्लाह से रखते हैं , और ईमान वाले अल्लाह से अधिक प्रेम करते हैं।) [सूरा बक़रा : 165]

और सहीह मुसलिम की एक हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह ' का इक़रार किया और अल्लाह के सिवा पूजी जाने वाली अन्य वस्तुओं का इनकार कर दिया , उसका धन तथा प्राण सुरक्षित हो जाएगा और उसका हिसाब अल्लाह के हवाले होगा। "

इस अध्याय की व्याख्या आने वाले अध्यायों में देखी जा सकती है।

इसमें सबसे बड़े तथा महत्वपूर्ण विषय का वर्णन है **,** और वह है **:**

[illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

: ... ...

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

चौथी : धागा तथा छल्ला आदि दुनिया में भी लाभदायक नहीं , बल्कि हानिकारक हैं। आपने फ़रमाया : "यह केवल तुम्हारी बीमारी को बढ़ाने का काम करेगा। "

पाँचवीं : इस तरह की चीज़ों पहनने वालों का सख़्ती से खंडन होना चाहिए।

छठी : इस बात की वज़ाहत कि जिसने कोई वस्तु लटकाई , उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।

सातवीं : इस बात की वज़ाहत कि जिसने तावीज़ लटकाया , उसने शिर्क किया।

आठवीं : बुख़ार के कारण धागा पहनना भी शिर्क के अंतर्गत आता है।

नवीं : हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्ह का इस आयत की तिलावत करना , इस बात का प्रमाण है कि सहाबा किराम बड़े शिर्क वाली आयतों से छोटे शिर्क के लिए तर्क दिया करते थे , जैसा कि अब्दुल्लाह अब्बास ने सूरा बक़रा की आयत के संबंध में उल्लेख किया है।

दसवीं : बुरी नज़र से बचने के लिए कौड़ी लटकाना भी शिर्क है।

ग्यारहवीं : जिसने तावीज़ लटकाया उसको यह बददुआ देना कि अल्लाह उसका उद्देश्य पूरा न करे , और जिसने कौड़ी लटकाई उसको यह बद दुआ देना कि अल्ला उसको आराम ने दे।

किताबुत तौहीद
2

[illegible]

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : दम करने तथा तावीज़ -गंडे आदि के प्रयोग के बारे में शरई दृष्टिकोण

सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में अबू बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि वे किसी सफ़र के दौरान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे कि इसी दरमियान आपने एक संदेशवाहक को (यह घोषणा करने के लिए) भेजा : "किसी ऊँट की गर्दन में तांत का पट्टा अथवा कोई भी पट्टा नज़र आए तो उसे काट दिया जाए।"

और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "निश्चय ही दम करना, तावीज़ गंडे बाँधना और पति -पत्नी के बीच प्रेम पैदा करने के लिए जादूई अमल करना शिर्क है।" इस हदीस को अहमद तथा अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

तमाइम (तमीमा का बहुवचन) : वह चीज़ जो बुरी नज़र से बचने के लिए बच्चों को पहनाई जाए। हाँ, यदि उस चीज़ में क़ुरआन की आयतें हों तो सलफ़ (सहाबा और ताबईन) में से कुछ ने इसे पहनाने की अनुमति दी है, जबकि इनमें से कुछ लोग इससे भी रोकते हैं तथा इसे हराम में से घोषित करते हैं। इस तरह के लोगों में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल हैं।

[illegible] (illegible) [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

तथा सईद बिन जुबैर कहते हैं : "जिसने किसी इनसान का तावीज़ काट दिया , उसे एक दास मुक्त करने का पुण्य मिलेगा। " इसे वकी ने रिवायत किया है।

इसी तरह वकी ने ही इबराहीम नख़ई से रिवायत किया है कि उन्होंने फ़रमाया : "वे लोग (अर्थाथ इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के शिष्य) हर तरह की तावीज़ को हराम जानते थे , क़ुरआन से हो या क़ुरआन के अतिरिक्त से। "

इस अध्याय की मुख्य बातें **:**

पहली : रुक़्या तथा तमीमा की व्याख्या की गई है।

दूसरी : तिवला की व्याख्या की गई है।

तीसरी : यह तीनों ही चीज़ें बिना किसी अपवाद के शिर्क में से हैं।

चौथी : बुरी नज़र तथा डंक के इलाज के तौर पर सत्य शब्दों (आयात आदि) के द्वारा जो रुक़्या किया जाए यानी दम किया जाए अथवा फूँक मारी जाए वह शिर्क में से नहीं है।

पाँचवीं : यदि तावीज़ में कुरआन की आयतें हों तो उलेमा के दरमियान मतभेद है कि यह शिर्क में से होगा या नहीं ?

छठी : बुरी नज़र से बचने के लिए जानवरों को तांत के पट्टे पहनाना भी शिर्क है।

: [illegible]

: [illegible]

: [illegible]

: [illegible]

{ : [illegible] أَفَـرَأَيْتُمُ اللاَّتَ وَالْعُـزَّى (!) وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الأُخْرَى ?أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الأُنْثَى ?تِلْكَ إذًا قِسْمَةٌ ضِيْزَى إنْ هِيَ إلاَّ أسمَاءٌ سَمَّيتُمُوهَا أنتُمْ وءاباآؤكُمْ مَا أنزَلَ اللـهُ بهـا مِن سُـلْطَانٍ إن يَتَّبِعُـونَ إلاَّ الظَّنَّ وَمَـا تَهْـوَى الأَنْفُسُ ولقَـدْ جَـآءهُم مِّن رَّبِّهِـمُ الهُدَى} [illegible] [illegible] : 19 - 23]

किताबुत तौहीद
2

अबू वाक़िद लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, वह कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुनैन की ओर निकले। उस समय हम नए-नए मुसलमान हुए थे। उन दिनों मुश्रिकों का एक बेरी का पेड़ हुआ करता था, जिसके पास ठहरते थे तथा उसपर अपने हथियार भी लटकाया करते थे। उस पेड़ का नाम ज़ात-ए-अनवात था। सो हम एक बेरी के पेड़ के पास से गुज़रे तो हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, जैसे मुश्रिकों के पास ज़ात-ए-अनवात है, हमारे लिए भी एक ज़ात-ए-अनवात नियुक्त कर दें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाहु अकबर, यह सब (गुमराही के) रास्ते हैं। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, तुमने वैसी ही बात की, जैसी बनी इसराईल ने मुसा से की थी कि: {जैसे उनके बहुत-से पूज्य हैं, वैसे हमारे लिए भी एक पूज्य नियुक्त कर दें। (मूसा ने) कहा: निःसंदेह तुम नासमझ क़ौम हो।) [सूरा-आराफ़: 138] तुम भी अवश्य अपने से पहले के लोगों के रास्तों पर चल पड़ोगे।" इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया है तथा सहीह भी करार दिया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें:

पहली: सूरा नज्म की उपर्युक्त आयत की तफ़सीर की गई है।

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : उस बात को स्पष्ट रूप से समझाया गया है, जिसकी कुछ नए-नए मुसलमान होने वाले सहाबा ने माँग की थी।

तीसरी : यह स्पष्ट है कि उन्होंने केवल माँग की थी, कुछ किया नहीं था।

चौथी : उन नए-नए मुसलमान होने वाले सहाबा का अनुमान था कि अल्लाह को यह बात (ज़ात-ए-अनवात से बरकत हासिल करना आदि) पसंद है, इसलिए इसके द्वारा वे अल्लाह की निकटता प्राप्त करना चाहते थे।

पाँचवीं : जब उनको यह बात मालूम नहीं थी, तो इस बात की अधिक संभावना है कि अन्य लोगों को भी मालूम न हो।

छठी : उनके पास जो पुण्य हैं तथा उन्हें क्षमा का जो वचन दिया गया है, वह दूसरे लोगों को प्राप्त नहीं।

सातवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क्षमा योग्य नही माना, बल्कि यह कर उनका खंडन किया कि : "अल्लाहु अकबर, यह सब (गुमराही के) रास्ते हैं, तुम भी अवश्य अपने से पहले के लोगों के रास्तों पर चल पड़ोगे।" चुनांचे इन तीन वाक्यों वाक्यों द्वारा इस काम की निंदा तथा भर्त्सना की।

आठवीं : एक बड़ी बात, जो मूल उद्देश्य है, यह है कि आपने बताया, उनकी यह माँग बनी इसराईल की माँग जैसी ही है, जब उन्होंने

किताबुत तौहीद 2

मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि हमारे लिए एक पूज्य नियुक्त कर दें।

नवीं : इस (पेड़ों आदि से बरकत चाहने) का इनकार करना "ला इलाहा इल्लल्लाह " के अर्थ में शामिल है। यह अलह बात है कि यह बात उनसे ओझल और छुपी रही।

दसवीं : आपने फ़तवा देते हुए क़सम खाई और आप बिना किसी मसलहत के क़सम नहीं खाते थे।

ग्यारहवीं : शिर्क दो प्रकार के हैं : छोटा एवं बड़ा , क्योंकि उस माँग से वे धर्म से नहीं निकले।

बारहवीं : उनका यह कहना कि "हम उस समय नए-नए मुसलमान हुए थे। " से पता चलता है कि उनके सिवा अन्य लोगों को यह बात (कि इस प्रकार बरकत हासिल करना सही नहीं) मालूम थी।

तेरहवीं : आश्चर्य के समय अल्लाहु अकबर कहने का प्रमाण , जबकि कुछ लोग इसे नापसंद कहते हैं।

चौदहवीं : माध्यमों (बुराई और शिर्क के ओर ले जाने वाले रास्तों) को बंद करना।

पंद्रहवीं : जाहिलियत काल के लोगों की मुशाबहत अपनाने से रोका गया है।

सोलहवीं : शिक्षा देते समय (किसी मसलहत के तहत) क्रोधित होने का प्रमाण मिलता है।

किताबुत तौहीद 2

सत्रहवीं : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "यह सब (गुमराही के) रास्ते हैं" फ़रमाकर एक मूल नियम बयान कर दिया है।

अठारहवीं : यह आपके नबी होने का एक अकाट्य प्रमाण है, क्योंकि जैसा आपने कहा था, बाद में वैसा ही हुआ।

उन्नीसवीं : जिस बात के कारण भी अल्लाह ने यहूदियों तथा ईसाइयों की निंदा की है, दरअसल वह हमारे लिए चेतावनी है।

बीसवीं : यह सिद्धांत विद्वानों के यहां निर्धारित है कि इबादतों का आधार (अल्लाह तआला और उसके रसूल के) आदेश पर है। तो इस (ज़ातु अनवात वाली) हदीस में क़ब्र में पूछी जाने वाली तीन बातों की और संकेत है। पहली बात "तेरा रब कौन है?" तो स्पष्ट है। दूसरी बात "तेरा नबी कौन है?" तो नबूवत की ओर संकेत आपकी भविष्यवाणी में है जिसका इस हदीस में उल्लेख हुआ है। तीसरी बात "तेरा धर्म क्या है?" इसकी ओर संकेत इस कथन में है कि {हमारे लिए भी एक पूज्य निर्धारित कर दे...} अंत तक।

इक्कीसवीं : मुश्रिकों की तरह यहूदियों एवं ईसाइयों के तौर-तरीक़े भी निंदनीय एवं अमान्य हैं।

बाईसवीं : जब कोई किसी गलत तौर-तरीक़े से बाहर निकलता है, तो यह शंका बाकी रहती है कि उसके दिल में उस तौर-तरीक़े का कुछ असर रह

किताबुत तौहीद 2

जाए। इसका प्रमाण उन सहाबा का यह कथन है :
"और हम उस समय नए-नए मुसलमान हुए थे। "

: : :

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद
2

उसे मार दिया और वह जन्नत में दाखिल हो गया। इसे इमाम अह़मद ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : अल्लाह के कथन : {إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي} (निःसंदेस मेरी नमाज़ तथा मेरी क़ुरबानी ...) की व्याख्या की गई है।

दूसरी : अल्लाह के फ़रमान : {فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ} (तो तुम अपने पालनहार के लिए नमाज़ पढ़ो तथा क़ुरबानी करो) की व्याख्या की गई है।

तीसरी : जिसने अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए ज़बह किया हो उसपर सबसे पहले लानत की गई है।

चौथी : जिसने अपने माता-पिता पर लानत भेजी, उसपर लानत भेजी गई है। इसका एक रूप यह है तुम कसी के माता-पिता पर लानत भेजो और परिणामस्वरूप वह तुम्हारे माता-पिता पर लानत भेजे।

पाँचवीं : उस व्यक्ति पर भी लानत भेजी गई है, जो दीन में नई चीज़ दाखिल करने वाले किसी व्यक्ति को शरण दे। इससे मुराद ऐसा व्यक्ति है, जो कोई ऐसा नया काम करे, जिसमें अल्लाह का कोई अधिकार अनिवार्य होता हो। फिर इसके उपरांत वह किसी ऐसे व्यक्ति के पास पहुँचे, जो उसे अपना शरण दे।

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

तसमे से भी अधिक निकट है तथा नर्क का भी यही हाल है। "

तेरहवीं : इस बात की जानकारी मिली कि दिल का अमल ही सबसे बड़ा उद्देश्य है , यहाँ तक कि मूर्तिपूजकों के निकट भी।

: ﷺ ﷺ ﷺ

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद
2

आठवीं : ऐसे (त्योहार आदी वाले) स्थान में मानी हुई मन्न पूरी करना जायज़ नहीं ; क्योंकि यह अवज्ञा की मन्नत है।

नवीं : बिना इरादे के ही सही पर त्योहारों में मुश्रिकों की मुशाबहत से सावधान रहना चाहिए।

दसवीं : अवज्ञा वाली मन्नत का कोई एतबार नहीं।

ग्यारहवीं : इसी प्रकार से ऐसी मन्नत का भी कोई एतबार नहीं , जो इनसान के बस के बाहर हो।

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : अल्लाह के सिवा किसी और के लिए मन्नत मानना शिर्क है

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {يُوفُونَ بِالنَّذْرِ ويخَـافُونَ يَومًـا كـانَ شَـرُّهُ مُسْـتَطِيرًا} (जो (इस दुनिया में) मन्नत पूरी करते हैं तथा उस दिन से डरते हैं , जिसकी आपदा चारों ओर फैली हुई होगी।) [सूरा इनसान : 7]

एक अन्य स्थान में उसका फ़रमान है : {وَمَا أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللهَ يَعْلَمُهُ} (तथा तुम जो भी दान करो अथवा मन्नत मानो , अल्लाह उसे जानता है।) [सूरा बक़रा : 207]

और सहीह बुखारी में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो अलालह के आज्ञापालन की मन्नत माने वह अल्लाह के आदेश का पालन करे और जो उसकी नाफरमानी की मन्नत माने वह उसकी अवज्ञा न करे। "

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : मन्नत पूरी करना अनिवार्य है।

दूसरी : जब यह प्रमाणित हो गया कि मन्नत मानना अल्लाह की इबादत है , तो फिर किसी और के लिए मन्नत मानना शिर्क है।

तीसरी : जिस मन्नत में गुनाह हो उसे पूरा करना वैध नहीं।

: { وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادوهُمْ رَهَقًا} ( ) [: 6]

: "' ' ', "

:

: .

: .

: , , .

[illegible]

: [illegible]

وَلاَ } : [illegible] تَدْعُ مِن دُونِ اللهِ مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُـرُّكَ فَـإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ) [illegible] وَإِن يَمْسَسْكَ اللهُ بِضُرٍّ فَلاَ كَاشِفَ لَهُ إِلاَّ هُوَ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيرٍ فَلا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ {) [illegible] [illegible] : 106 -107]

} : [illegible] {فَـابْتَغُواْ عِنـدَ اللـهِ الـرِّزْقَ وَاعْبُـدُوهُ وَاشْـكُرُوا لَـهُ إِليـهِ تُرْجَعُـونَ) [illegible] [illegible] : 17]

} : [illegible] وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُو مِن دُونِ اللـهِ مَن لاَّ يَسْـتَجِيبُ لَـهُ إِلَى يَـوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُم عَن دُعَائِهِم غَـافِلونَ) [illegible]

وَإِذا ? (حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ} [الأحقاف : 5 , 6]

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعلُكُمْ : {خُلَفَاءَ الأَرْضِ أَإِلهٌ مَعَ اللهِ [النمل : 62]

:

وَلاَ تَدْعُ مِن دُونِ اللهِ} : [illegible] {مَا لاَ يَنفَعُكَ وَلاَ يَضُرُّكَ} (مَا [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللهُ بِضُرٍّ فَلاَ ...} : [illegible] { كَاشِفَ لَهُ إِلاَّ هُوَ} (كَاشِفَ [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

किताबुत तौहीद
2

दसवीं : अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारने वाले से अधिक गुमराह कोई नहीं है।

ग्यारहवीं : अल्लाह के सिवा जिसे पुकारा जाता है , वह पुकारने वाले की पुकार से बेखबर होता है। वह नही जानता कि उसे कोई पुकार भी रहा है।

बारहवीं : जिसे अल्लाअह के अतिरिक्त पुकारा जाता है , वह इस पुकार के कारण पुकारने वाले का दुश्मन बन जाएगा।

तेरहवीं : अल्लाह के सिवा किसी को पुकारने को पुकारे जाने वाले की इबादत का नाम दिया गया है।

चौदहवीं : जिसे पुकारा जा रहा है , वह क़यामत के दिन इस इबादत का इनकार कर देगा।

पंद्रहवीं : अल्लाह के सिवा किसी से फरियाद करने और उसको पुकारने के कारण ही वह व्यक्ति सबसे अधिक गुमरहा हो गया।

सोलहवीं : पाँचवीं आयत की व्याख्या भी मालूम हुई।

सत्रहवीं : आश्चर्यजनक बात यह है कि मूर्तिपूजक भी यह मानते हैं कि व्याकुल व्यक्ति की पुकार केवल अल्लाह ही सुनता है। यही कारण है कि वे कठिन परिस्थितियों में सबको छोड़ -छाड़कर केवल अल्लाह को पुकारते हैं।

किताबुत तौहीद 2

अठारहवीं : इससे साबित होता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एकेश्वरवाद की वाटिका ही संपूर्ण रक्षा की है और बंदों को अल्लाह के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करने की शिक्षा दी है।

: **أَيُشْرِكُونَ مَا لاَ يَخْلُقُ شَيْئًا}** **وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلاَ يَسْتَطِيعُونَ ?** **{لَهُمْ نَصْرًا ولا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ [: 191-192]**

: { وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ إن تَدْعُوهُمْ لا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا استَجَابُوا لَكُمْ وَيَومَ القِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِير) [: 13 ,14]

किताबुत तौहीद 2

दे ?" ऐसे में यह आयत नाज़िल हुई : {आपके अधिकार में कुछ भी नहीं है। } [सूरा आल -ए-इमरान : 28]

और सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़ज्र की नमाज़ के अंदर अंतिम रकात के रुकू से सर उठाने के बाद तथा "سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ" कहने के पश्चात यह कहते हुए सुना : "ऐ अल्लाह , अमुक तथा अमुक पर लानत कर।" जिसपर अल्लाह ने यह आयत उतारी : {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ} (आपके अधिकार में कुछ भी नहीं है।) [सूरा आल -ए-इमरान : 28]

जबकि एक रिवायत में है कि आप सफवान बिन उमैया , सुहैल बिन अम्र एवं हारिस बिन हिशाम पर बददुआ कर रहे थे , तो यह आयत उतरी : {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ} (आपके अधिकार में कुछ भी नहीं है।) [सूरा आल -ए-इमरान : 28]

तथा सहीह बुखारी में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है , वह कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतरी : {وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} (और अपने निकटवर्तियों को डराएँ।) [सुरा -शुआरा : 214] तो आप खड़े हुए और फ़रमाया : "कुरैश के लोगो ! -या इसी प्रकार का कोई और संबोधन का शब्द प्रयोग किया - अपने आप को खरीद लो , अल्लाह के यहाँ मैं तुम्हारे कुछ

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद

2

छठी : इसी संबंध में अल्लाह ने आपपर यह आयत उतारी : {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ} (आप के अधिकार में कुछ नहीं है।)

सातवीं : अल्लाह ने फ़रमाया : {أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ} (या अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे या उन्हें यातना दे।) चुनांचे अल्लाह ने उनकी तौबा क़बूल कर ली और वे ईमान ले आए।

आठवीं : मुसीबतों के समय कुनूत पढ़ने का सबूत।

नवीं : नमाज़ के अंदर जिनपर बददुआ की जाए, उनके तथा उनके पिता के नाम का सबूत।

दसवीं : दुआ-ए-क़ुनूत के अंदर किसी विशेष व्यक्ति पर लानत भेजने का सबूत।

ग्यारहवीं : उस परिस्थिति का वर्णन जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतरी थी : {وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} (और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती संबंधियों को।)

बारहवीं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस कार्य में इस क़दर तत्परता दिखाई कि आपको पागल कहा जाने लगा तथा वस्तुस्थिति यह है कि आज भी यदि कोई उसी तरह मुस्तैदी दिखाए, तो उसे भी वही नाम दिया जाएगा।

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

करता है , तो फरिश्ते आज्ञापालन तथा विनय के तौर पर अपने पर मारते हैं। उस समय ऐसी आवाज़ पैदा होती है , जैसे किसी साफ पत्थर पर ज़ंजीर के पड़ने की आवाज़ हो। यह बात फरिश्तों तक पहुंचती है। फिर जब उनसे घबराहट दूर होती है तो वे एक -दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया ? तो (अल्लाह के निकटवर्ती फ़रिश्ते) कहते हैं कि उसने सत्य फरमाया है और वह सर्वोच्च तथा सबसे बड़ा है। तब चोरी से कान लगाने वाले जिन्न उस बात को सुन लेते हैं। वे , उस समय इस प्रकार एक -दूसरे पर सवार होते हैं। इस बात को कहते समय हहीस के वर्णनकर्ता सुफ़यान ने अपनी हथेली को टेढ़ा किया और उंगलियो को फैलाते हुए बताया कि वे इस प्रकार एक -दूसरे पर सवार होते हैं। एक शैतान उसे सुनकर अपने से नीचे वाले को पहुंचाता है और वह अपने से नीचे वाले को। यहाँ तक कि वह बात जादूगर या काहिन तक पहुँच जाती है। कभी उस बात को नीचे भेजने से पहले ही शैतान पर सितारे की मार पड़ती है और कभी वह इससे बच जाता है। फिर वह जादूगर या काहिन उसके साथ सौ झूटी बातें मिलाता है , तो लोग कहते हैं : क्या उसने अमुक दिन यह और यह बात नहीं बताई थी ? इस प्रकार आसमान से प्राप्त उस एक बात के कारण उस जादूगर या काहिन को सच्चा समझ लिया जाता है। "

□□□

[illegible]

किताबुत तौहीद 2

बारहवीं : शैतानों के एक -दूसरे पर सवार होने की सिफत भी बता दी गई है।

तेरहवीं : (शैतानों को भगाने के लिए) चमकते तारों का भेजा जाता हैं।

चौदहवीं : शैतान कभी तो सुनी हुई बात को नीचे भेजने से पहले ही चमकते तारे का शिकार हो जाते हैं

और कभी उसका शिकार होने से पहले अपने मानवा मित्रों को पहुँचाने में सफल हो जाते हैं।

पंद्रहवीं : काहिन की कुछ बातें सच्ची भी होती हैं।

सोलहवीं : लेकिन वह एक सच्ची बात के साथ सौ झूठ मिलाता है।

सत्रहवीं : आसमान से प्राप्त उस एक सच्ची बात के कारण ही उसकी तमाम झूठी बातों को को सच मान लिया जाता है।

अठारहवीं : इनसान का दिल असत्य को स्वीकार करने के लिए अधिक तत्पर रहता है। यही कारण है कि वह एक सच्ची बात से चिमट जाता है , लेकिन सौ झूठी बातों पर ध्यान नहीं देता।

उन्नीसवीं : शैतान उस एक बात को एक -दूसरे से प्राप्त करते हैं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

: ( )

وَأَنذِرْ} : ... ...

قُلِ ادْعُوا} : ... الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللهِ لاَ يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلاَ فِي الأَرْضِ ومَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ ومَا لَهُ مِنْهُم مِّنْ ظَهِيرٍ ! ... {ولا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ... ...

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद
2

अतः जिस अनुशंसा का कुरआन ने इनकार किया है , वह ऐसी अनुशंसा है जिसमें शिर्कहो। यही कारण है कि उसकी अनुमति से होने वाली सिफ़ारिश को कई स्थानों पर सिद्ध किया है। साथ ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी स्पष्ट कर दिया है कि यह सिफ़ारिश केवल तौहीद तथा इख़लास वालों को प्राप्त होगी। " अबुल अब्बास इब्न -ए-तैमिया की बात समाप्त हुई।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : उपर्युक्त आयतों की व्याख्या।

दूसरी : उस सिफ़ारिश का विवरण , जिसका इनकार किया गया है।

तीसरी : उस सिफ़ारिश का विवरण , जिसे सिद्ध किया गया है।

चौथी : सबसे बड़ी सिफ़ारिश का उल्लेख।

उसी के अधिकार का नाम मक़ाम -ए-महमूद (प्रशंसित स्थान) है।

पाँचवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश का विवरण कि आप पहुँचने के साथ ही सिफ़ारिश शुरू नहीं कर देंगे , बल्कि पहले सजदा करेंगे।

फिर जब अल्लाह की ओर से अनुमति मिलेगी , तो सिफ़ारिश करेंगे।

किताबुत तौहीद 2

छठी : इस बात का उल्लेख कि आपकी सिफ़ारिश सबसे अधिक हक़दार कौन होगा ?

सातवीं : आपकी सिफ़ारिश का सौभाग्य शिर्क करने वालों को प्राप्त नहीं होगा।

आठवीं : इस सिफ़ारिश की वास्तविकता का वर्णन।

إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللهَ يَهْدِي مَن يَشَاء وَهُوَ أَعْلَمُ بِالمُهتَدِينَ} ((!) **56]**

[illegible] [illegible] [illegible] [

(...) ... (...) ...

... : ... "قُلْ لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللـهُ" ..., ...

किताबुत तौहीद 2

नवीं : पूर्वजों तथा बड़े लोगों के असीमित सम्मान का नुक़सान।

दसवीं : यह (अर्थात पूर्वजों की बातों को प्रमाण मानना) कुपथगामियों का एक संदेह है, क्योंकि अबू जह्ल ने इसी को प्रमाण के रूप में पेश किया।

ग्यारहवीं : इस बात का सबूत कि असल एतबार अंतिम अमल का होता है; क्योंकि यदि अबू तालिब ने यह कलिमा कह दिया होता, तो उन्हें इसका लाभ मिलता।

बारहवीं : यह बात ध्यान देने योग्य है कि गुमराह लोगों के दिलों में पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलने का कितना महत्व होता है? क्योंकि इस घटना में अबू जह्ल तथा उसके साथी ने उसे ही अपने तर्क का आधार बनाया। हालांकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बार-बार अपनी बात दोहराई। लेकिन उन दोनों ने अपने तर्क के महत्व और स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए केवल उसी को पेश किया।

: [illegible]

[illegible] {يَا أَهْلَ الْكِتَـابِ لاَ تَغْلُـواْ فِي دِينِكُمْ ولا تَقُولُـوا عَلَى اللـهِ إلاَّ الحـقَّ إنمـا المَسِيحُ عِيسى ابنُ مَـرْيمَ رَسُـولُ اللـهِ وكَلِمَتُـهُ أَلْقَاهـا إِلَى مَـرْيمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ} (1 [illegible]

وَقَالُواْ لاَ تَذَرُنَّ} : [illegible] {آلِهَتَكُمْ وَلاَ تَذَرُنَّ وَدًّا وَلاَ سُـوَاعًا وَلاَ يَغُـوثَ وَيَعُـوقَ وَنَسْـرًا [illegible]

[illegible] : "[illegible]

किताबुत तौहीद 2

उन पत्थरों की पूजा नहीं हुई, यहां तक कि जब यह लोग भी गुज़र गए और लोग ज्ञान से दूर हो गए, तो उन पत्थरों की पूजा होने लगी।"

इब्न अल-क़य्यिम कहते हैं: "सलफ़ में से कई एक ने कहा है कि जब वे (सदाचारी) मर गए, तो लोग पहले उनकी कबरों के मुजाविर बने, फिर उनकी मूर्तियां बनाईं और फिर एक लम्बे समय के पश्चात उनकी पूजा करने लगे।"

तथा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "तुम लोग मेरे प्रति प्रशंसा और तारीफ़ में उस प्रकार अतिशयोक्ति न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने मरयम के पुत्र के बारे में किया। मैं केवल एक बंदा हूँ। अतः मुझे अल्लाह का बंदा और उसका रसूल कहो।" इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: "तुम लोग अतिशयोक्ति से बचो। क्योंकि इसी अतिशयोक्ति ने तुमसे पहले के लोगों का विनाश किया है।"

तथा सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अतिशयोक्ति तथा सख़्ती करने

किताबुत तौहीद 2

वालों का विनाश हो गया। " आपने यह बात तीन बार दोहराई।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : जो इस अध्याय तथा इसके बाद के दो अध्यायों को समझ लेगा , उसके सामने इस्लाम के अजनबी होने की स्थिति स्पष्ट हो जाएगी

और वह अल्लाह के सामर्थ्य तथा दिलों को फेरने की शक्ति के आश्चर्यजनक दृश्य देखेगा।

दूसरी : इस बात की जानकारी कि धरती में सबसे पहला शिर्क सदाचारियों से संबंधित संदेह के कारण हुआ।

तीसरी : उस पहली वस्तु की जानकारी जिस के द्वारा नबियों के दीन को बदला गया , और इस बात की जानकारी कि इस बदलाव का कारण क्या था , तथा इस बात का ज्ञान कि अल्लाह ने उन नबियों को भेजा था।

चौथी : बिदअत तथा दीन के बारे में गढ़ी गई नई चीज़ों को स्वीकृति मिलना , जबकि शरीयतें एवं फितरतें दोनों ही उन्हें स्वीकार नहीं करतीं।

पाँचवीं : इस बात की जानकारी कि इन सब का कारण था सत्य तथा असत्य का मिश्रण और इसकी दो वजहें थीं :

किताबुत तौहीद
2

पहली वजह : अल्लाह के सदाचारी बंदों से असीमित प्रेम।

दूसरी वजह : कुछ ज्ञानी तथा धार्मिक लोगों का ऐसा कार्य, जिसे वे अच्छी नीयत से कर रहे थे, लेकिन बाद के लोगों ने समझा कि उनका इरादा कुछ और था।

छठीं : सूरा नूह की आयत की तफ़सीर।

सातवीं : आदमी की फितरत कि उसके दिल में सत्य का प्रभाव घटता रहता है और असत्य का प्रभाव बढ़ता जाता है।

आठवीं : इससे सलफ़ यानी सदाचारी पूर्वजों से वर्णित से इस बात की पुष्टि होती है कि बिदअतें कुफ़्र का सबब हुआ करती हैं।

नवीं : शैतान को मालूम है कि बिदअत का अंजाम क्या है, यद्यपि बिदअत करने वाले का उद्देश्य अच्छा हो।

दसवीं : इससे एक बड़ा सिद्धांत मालूम हुआ कि अतिशयोक्ति करना मना है। साथ ही उसके अंजाम का भी ज्ञान हो गया।

ग्यारहवीं : क़ब्र के पास किसी पुण्य कार्य के लिए बैठना हानिकारक है।

बारहवीं : इससे मूर्तियों से मनाही की जानकारी मिली और यह मालूम हुआ कि उन्हें हटाने के आदेश में कौन-सी हिकमत निहित है।

किताबुत तौहीद 2

तेरहवीं : इस घटना के महत्व की जानकारी मिली और यह भी मालूम हुआ कि इसे जानने की कितनी आवश्यकता है , जबकि लोग इससे बेखबर हैं।

चौदहवीं : सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि लोग इस घटना को तफ़सीर और हदीस की किताबों में पढ़ते हैं एवं समझते भी हैं। लेकिन अल्लाह ने उनके दिलों में इस तरह मुहर लगा दी है कि वे नूह अलैहिस्सलाम की जाति के अमल को सबसे उत्तम इबादत समझ बैठे हैं और जिस चीज़ से अल्लाह और उसके रसूल ने मना किया है , उससे रोकने को ऐसा कुफ्र मान चुके हैं कि उसके कारण इनसान की जान और माल हलाल हो जाते हैं।

पंद्रहवीं : इस बात का वज़ाहत कि नूह अलैहिस्सलाम की कौम का उद्देश्य केवल अनुशंसा की प्राप्ति ही था।

सोलहवीं : बाद के लोगों का यह समझना कि जिन विद्वानों ने वह मूर्तियाँ स्थापित की थीं उनका उद्देश्य उनकी पूजा ही था।

सत्रहवीं : आपका यह महत्वपूर्ण फरमान कि "मेरे बारे में अतिशयोक्ति न करना , जिस तरह ईसाइयों ने मरयम के पुत्र के बारे में किया था। " अतः आपपर अनंत दरूद व सलाम अवतरित हो कि आपने इस बात को पूर्ण स्पष्टता के साथ पहुँचा दिया।

किताबुत तौहीद 2

अठारहवीं : आपका हमें इस बात की नसीहत कि अतिशयोक्ति करने वाले हलाक हो गए।

उन्नीसवीं : इस बात का बयान कि उन मूर्तियों की पूजा तब तक नहीं हुई जब तक ज्ञान बाकी था। अतः इससे ज्ञान के बाकी रहने का महत्व और उसके न होने का नुकसान स्पष्ट होता है।

बीसवीं : ज्ञान के विलुप्त होने का कारण उलेमा की मौत है।

किताबुत तौहीद

2

अध्याय : किसी सदाचारी व्यक्ति की क़ब्र के पास बैठकर अल्लाह की इबादत करना भी बहुत बड़ा पाप है, तो स्वयं उसकी इबादत करना कितना बड़ा अपराध हो सकता है?!

सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक गिरजा का उल्लेख किया, जो उन्होंने हबशा में देखा था और साथ ही उसमें मौजूद तसवीरों का ज़िक्र किया, तो आपने फरमाया : "उन लोगों में से जब कोई सदाचारी व्यक्ति अथवा सदाचारी बंदा मर जाता, तो वे उसकी कब्र के ऊपर मस्जिद बना लेते और उसमें वह चित्र बना देते। वे अल्लाह के निकट सबसे बुरे लोग हैं।"

इस तरह इन लोगों के यहां दो फितने एकत्र हो गए ; कब्रों का फितना एवं मूर्तियों का फितना।

इसी तरह बुखारी और मुस्लिम ही में है कि आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु का समय निकट आया, तो आप एक चादर से अपना चेहरा ढाँक लेते। फिर जब उससे परेशानी होने लगती, तो उसे हटा देते। इसी दौरान आपने फरमाया : "यहूदियों तथा ईसाइयों पर अल्लाह का धिक्कार हो। उन लोगों ने नबियों की क़ब्रों को मसजिदें बना लीं।" आप यह कहकर उनके बुरे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : मूर्तियों से मनाही तथा इस मामले में सख़्त आदेश।

तीसरी : इस बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सख़्त व्यवहार में निहित सीख, कि कैसे आपने शुरू में इस बात को स्पष्ट किया , फिर मौत से पाँच दिन पहले इससे सावधान किया और इसी को पर्याप्त नहीं समझा , बल्कि जीवन के अंतिम लमहों में भी इससे सावधान किया।

चौथी : आपने अपनी कब्र के पास ऐसा करने से मना कर दिया , हालाँकि उस समय आपकी क़ब्र बनी भी नहीं थी।

पाँचवीं : यहूदी एवं ईसाई अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाकर उसमें इबादत करते आए हैं।

छठा : इसके कारण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनपर लानत की है।

सातवीं : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उद्देश्य आपकी कब्र के पास इस तरह का कोई काम करने से सावधान करना था।

आठवीं : यहाँ आपको खुले में दफ़न न करने का कारण स्पष्ट हो गया।

नवीं : कब्र को मस्जिद बनाने का अर्थ स्पष्ट हो गया।

किताबुत तौहीद 2

दसवीं : आपने क़ब्र को मस्जिद बनाने वाले

तथा क़यामत आने के समय जीवित रहने वाले को एक साथ बयान किया है। इस तरह , गोया आपने शिर्क के सामने आने से पहले ही उसके सबब और उसके अंजाम का उल्लेख कर दिया है।

ग्यारहवीं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मृत्यु से पाँच दिन पहले खुतबे में उन दो दलों का खंडन किया , जो सबसे बदतरीन बिदअती हैं।

बल्कि सलफ़ में से कुछ लोग तो इन दो दलों को बहत्तर दलों के अंतर्गत भी नहीं मानते। और वे दो दल हैंः राफ़िज़ा एवं जहमीया। राफ़िज़ा ही की वजह से शिर्क तथा कब्रपरस्ती ने जन्म लिया और इन्होंने ही सब से पहले क़ब्रों पर मस्जिदें बनाईं।

बारहवीं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी मृत्यु की कठिनाई का सामना करना पड़ा।

तेरहवीं : आप को अल्लाह के अनन्य मित्र (खलील) होने का सम्मान मिला।

चौदहवीं : इस बात का वर्णन कि इस मित्रता का स्थान मुहब्बत से कहीं ऊँचा है।

पंद्रहवीं : इस बात का उल्लेख कि अबू बक्र सर्वश्रेष्ठ सहाबी हैं।

किताबुत तौहीद
2

सोलहवीं : अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत की ओर इशारा।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : सदाचारियों की कब्रों के संबंध में अतिशयोक्ति उन्हें अल्लाह के सिवा पूजे जाने वाले बुतों में शामिल कर देती है

इमाम मालिक ने (मुवत्ता) में वर्णन किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह, मेरी क़ब्र को बुत न बनने देना, जिसकी उपासना होने लगे। उस कौम पर अल्लाह का बड़ा भारी प्रकोप हुआ, जिसने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया।"

और इब्ने जरीर ने अपनी सनद के द्वारा सुफयान से, उन्होंने मनसूर से और उन्होंने मुजाहिद से रिवायत करते हुए अल्लाह के कथन : {أَفَـرَأَيْتُمُ اللاَّتَ وَالْعُـزَّى} (तो (हे मुश्रिको!) क्या तुमने देख लिया लात्त तथा उज़्ज़ा को।) [सूरा नज्म : 19] के बारे में कहा : "लात्त लोगों को सत्तू घोलकर पिलाया करता था। जब वह मर गया, तो लोग उसकी कब्र पर मुजाविर बन बैठे।"

और इसी तरह अबुल जौज़ा ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत किया है कि : "वह हाजियों को सत्तू घोलकर पिलाया करता था।"

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं : "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

किताबुत तौहीद 2

क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली स्त्रियों , उनपर मस्जिद बनाने वालों और उनपर चिराग जलाने वालों पर लानत की है। " इसे सुनन के संकलनकर्ताओं ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : " الأَوْثَانِ" शब्द की व्याख्या मालूम हुई।

दूसरी : इबादत की व्याख्या मालूम हुई।

तीसरी : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी चीज़ से (अल्लाह की) शरण माँगी , जिसके घटित होने का आप को डर था।

चौथी : जहाँ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ की कि ऐ अल्लाह , मेरी क़ब्र को बुत न बनने देना कि उसकी उपासना होने लगे , वहीं आपने पिछले नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिए जाने का भी उल्लेख किया।

पाँचवीं : नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाने वालों पर अल्लाह के सख़्त क्रोध का उल्लेख।

छठीं : एक महत्वपूर्ण बात यह मालूम हुई कि लात्त की पूजा कैसे होने लगी , जो कि सबसे बड़े बुतों में से एक था।

सातवीं : इस बात की जानकारी मिली कि लात्त ए नेक व्यक्ति की कब्र थी।

किताबुत तौहीद 2

आठवीं : और लात्त उस क़ब्र में दफ़न व्यक्ति का नाम था। साथ ही उसे इस नाम से याद किए जाने का कारण भी मालूम हो गया।

नवीं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कब्रों की ज़ियारत करने वाली स्त्रियों पर लानत की है।

दसवीं : आपने कब्रों पर चिराग जलाने वालों पर भी लानत की है।

: [illegible]

[illegible] {لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيكُم بِالمُؤمِنينَ رَءوفٌ رَّحيمٌ} ((!) [illegible] : 128]

किताबुत तौहीद
2

हदीस न बताऊँ , जो मैंने अपने पिता के वास्ते से अपने दादा से सुनी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुम मेरी क़ब्र को मेला स्थल न बनाना और न अपने घरों को क़ब्रिस्तान बनाना। हाँ , मुझपर दुरूद भेजते रहना। क्योंकि तुम जहाँ भी रहो , तुम्हारा सलाम मुझे पहुँच जाएगा। " इसे (ज़िया मक़दसी ने अपनी पुस्तक) अल-अहादीसुल मुख्तारा में रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें **:**

पहली : सूरा बराअह (तौबह) की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

दूसरी : आपने अपनी उम्मत को शिर्क की चारदीवारी से बहुत दूर ले गए थे।

तीसरी : हमारे बारे में आपका विशेष ध्यान , दयालुता तथा करुणा का बयान।

चौथी : आपने अपनी कब्र की एक विशेष रूप से ज़ियारत करने से रोका है , हालाँकी उसकी ज़ियारत करना उत्तम कार्यों में से है।

पाँचवीं : आपने क़ब्रों की अधिक ज़ियारत करने से मना किया है।

छठीं : आपने घरों में नफ़ल नमाज़ें पढ़ने की प्रेरणा दी है।

किताबुत तौहीद

2

सातवीं : सलफ़ (सदाचारी पूर्वजों) के निकट यह एक स्थापित तथ्य था कि कब्रिस्तान में नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी।

आठवीं : आपने अपनी क़ब्र की बहुत ज़्यादा ज़ियारत से इसलिए रोका था , क्योंकि इनसान आपपर जहाँ से भी दरूद व सलाम भेजे , उसका दरूद व सलाम आपको पहुँच जाता है। इसलिए निकट आकर दरूद भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है।

नवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बर्ज़ख (मरने के बाद और क़यामत से पहले की अवस्था) में भी आपकी उम्मत की ओर से भेजे जाने वाले दरूद व सलाम पेश किए जाते हैं।

[redacted] : [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] : {أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُواْ نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद 2

पहली : सूरा निसा की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

दूसरी : सूरा माइदा की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

तीसरी : सूरा कहफ़ की उल्लिखित आयत की व्याख्या।

चौथी : एक महत्वपूर्ण बात यह मालूम हुई कि इस स्थान में जिब्त (बुत) तथा ताग़ूत (असत्य पूज्य) पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?

क्या यह दिल से विश्वास करने का नाम है

अथवा उनके असत्य होने की जानकारी तथा उससे घृणा के बावजूद उन्हें मानने वालों का समर्थन करना?

पाँचवीं : इससे यहूदियों की यह बात मालूम हुई कि अपने कुफ़्र से अवगत काफ़िर ईमान वालों से अधिक सीधे रास्ते पर हैं।

छठीं : इससे मालूम हुआ कि इस उम्मत के कुछ लोग बुतों की पूजा करेंगे, जैसा कि अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की हीस से सिद्ध होता है और यही इस अध्याय का मूल उद्देश्य भी है।

सातवीं : इस बात का स्पष्ट उल्लेख कि बुतों की पूजा का प्रचलन इस उम्मत के बहुत-से भागों में हो जाएगा।

किताबुत तौहीद
2

आठवीं : अति आश्चर्य की बात यह है कि कई नबूवत के दावेदार सामने आएँगे , जो अल्लाह के रब होने और मुहम्मद के रसूल होने की गवाही देंगे और यह स्वीकार करेंगे कि वह इसी उम्मत में शामिल हैं , रसूल सत्य हैं और कुरआन भी सत्य है , जिसमें लिखा है कि आप अंतिम रसूल हैं। फिर , इस स्पष्ट विरोधाभास के बावजूद उनकी इन सारी बातों को सच माना जाएगा। हुआ भी कुछ ऐसा ही। सहाबा के अंतिम दौर में मुख़्तरा सक़फ़ी ने नबी होने का दावा किया और बहुत -से लोगों ने उसे नबी मान भी लिया।

नवीं : इस बात की खुशख़बरी कि पूर्व युगों की तरह इस उम्मत के अंदर से सत्य बिल्कुल समाप्त नहीं हो जाएगा , बल्कि एक दल सदैव सत्य की आवाज़ बुलंद करता रहेगा।

दसवीं : बड़ी निशानी कि संख्या में बहुत ही कम होने के बावजूद इस सत्यवादी दल को उन लोगों से कोई नुकसान नहीं होगा , जो उनका साथ छोड़ देंगे और उनका विरोध करेंगे।

ग्यारहवीं : यह दशा क़यामत आने तक जारी रहेगी।

बारहवीं : उपर्युक्त हदीस में यह कुछ बड़ी निशानियाँ आई हैं : आपने सूचना दी कि अल्लाह ने आपके लिए धरती को समेट दिया और आपने उसके पूर्व एवं पश्चिम को देखा। आपने इसका अर्थ भी बताया और बाद में हुआ भी वैसा

किताबुत तौहीद 2

जैसा आपने बताया था। परन्तु उत्तर तथा दक्षिण में ऐसा नहीं हुआ। आपने सूचना दी कि आपको दो ख़ज़ाने दिए गए हैं। साथ ही यह कि अपनी उम्मत के संबंध में आपकी दो दुआएँ क़बूल हुईं, पर तीसरी क़बूल नहीं हुई। आपने बताया कि आपकी उम्मत के बीच जब तलवार चल पड़ेगी, तो फिर थमने का नाम नहीं लेगी। आपने यह भी बताया कि आपकी उम्मत के लोग एक-दुसरे की हत्या करेंगे तथा एक-दूसरे को क़ैदी बनाएँगे। आपने यह भी बताया कि आपको अपनी उम्मत के बारे में राह भटकाने वाले शासकों का डर है। आपने खबर दी कि इस उम्मत में नबूवत के दावेदार प्रकट होंगे। आपने यह भी बताया कि इस उम्मत के अंदर एक सहायता प्राप्त दल बाक़ी रहेगा। फिर, यह सब कुछ वैसे ही सामने आया जैसे आपने बताया था, हालाँकि यह सारी चीज़ें बहुत ही असंभव-सी लगती हैं।

तेरहवीं: आपने बताया कि आपको इस उम्मत के बारे में केवल गुमराह करने वाले शासकों का डर है।

चौदहवीं: बुतों की पूजा के अर्थ का वर्णन।

: [illegible]

[illegible] {وَلَقَدْ عَلِمُواْ لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَـهُ فِي الآخِـرَةِ مِنْ خَلاَقٍ} ([illegible]) [illegible] : 102}

[illegible] {يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ} ([illegible]) [illegible] [illegible] : 51]

[illegible] : "[illegible]"

[illegible] : "[illegible]"

[illegible] : "[illegible]"

[illegible] : [illegible]?

[illegible] : "[illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद

2

पहली : सूरा बक़रा की उपर्युक्त आयत की व्याख्य।

दूसरी : सूरा निसा की उल्लिखित आयत की व्याख्या।

तीसरी : जिब्त तथा ताग़ूत की व्याख्या एवं दोनों में अंतर।

चौथी : ताग़ूत इनसान और जिन्न दोनों में से हो सकता है।

पाँचवीं : उन साथ विनाशकारी गुनाहों की जानकारी , जिनसे विशेष रूप से रोका गया है।

छठीं : जादू करने वाला काफ़िर हो जाता है।

सातवीं : जादूगर को क़त्ल कर दिया जाएगा और तौबा करने को नहीं कहा जाएगा।

आठवीं : जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मुसलमानों के अंदर जादू करने वाले मौजूद थे , तो बाद के ज़मानों का क्या हाल हो सकता है ?

: [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

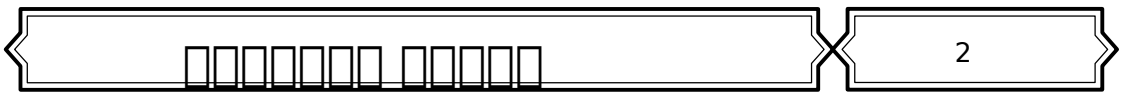

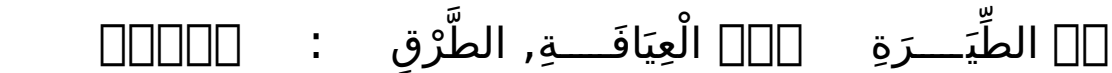
الطِّيَـــرَةِ الْعِيَافَـــةِ, الطَّرْقِ :

:

:

:

:

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : काहिन तथा इस प्रकार के लोगों के बारे में शरई दृष्टिकोण

सहीह मुस्लिम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किसी स्त्री से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो व्यक्ति किसी अर्राफ़ (ग़ैब की बात बताने वाले) के पास जाकर उससे कुछ पूछे और उसकी कही हुई बात को सच माने, तो उसकी चालीस दिन की नमाज़ स्वीकृत नहीं होती।"

और अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिस व्यक्ति ने किसी काहिन के पास जाकर उससे कुछ पूछा और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस दीन (धर्म) का इनकार किया जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

इसी तरह अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा तथा मुस्तदरक हाकिम में है

और इमाम हाकिम ने उसे बुख़ारी एवं मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है : "जिस व्यक्ति ने किसी काहिन अथवा अर्राफ़ के पास जाकर उससे कुछ पूछा और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस दीन (धर्म) का इनकार किया जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा है।"

किताबुत तौहीद 2

और मुसनद अबू याला में

उत्तम सनद के साथ इसी तरह की बात अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है।

तथा इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "वह व्यक्ति हममें से नहीं, जिसने अपशगुन लिया अथवा जिसके लिए अपशगुन लिया गया, जिसने काहिन वाला कार्य किया अथवा काहिन वाला कार्य किसी से करवाया, जिसने जादू किया या जादू करवाया। तथा जो किसी काहिनके पास गया और उसकी बात को सच माना, उसने उस शरीयत का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई है।" इस हदीस को बज़्ज़ार ने उत्तम सनद के साथ रिवायत किया है।

जबकि तबरानी ने उसे अपनी पुस्तक "अल-औसत" में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है, लेकिन उसमें "जो किसी काहिन के पास गया ..." से बाद का भाग मौजूद नहीं है।

इमाम बग़वी फ़रमाते हैं : "अर्राफ़ : वह व्यक्ति जो कुछ साधनों का उपयोग कर चोरी की हुई अथवा खोई हुई वस्तु आदि के बारे में बताने का दावा करता हो।"

जबकि कुछ लोगों के अनुसार अर्राफ़ और काहिन समानार्थक शब्द हैं और दोनों से

किताबुत तौहीद 2

अभिप्राय ऐसा व्यक्ति है, जो भविष्यवाणी करता हो।

एक और मत के अनुसार काहिन वह होता है जो किसी के दिल की बाताता हो।

जबकि इब्न-ए-तैमिया कहते हैं: "काहिन, ज्योतिषी एवं रम्माल (जो बालू पर लकीर खींचकर ग़ैब की बातें जानने का दावा करे) तथा इन जैसे लोग, जो इन तरीकों से वस्तुओं के ज्ञान का दावा करते हैं, उनको अर्राफ़ कहा जाता है।"

तथा अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ऐसे लोगों के बारे में, जो कुछ वर्णों को लिखते हैं और तारों को देखते हैं और इस तरह ग़ैब की बात बताने का दावा करते हैं, फ़रमाया: "मुझे नहीं लगता कि ऐसा करने वाले के लिए अल्लाह के निकट कोई भाग होगा।"

इस अध्याय की मुख्य बातें:

पहली: क़ुरआन पर ईमान तथा काहिन को सच्चा मानना एकत्र नहीं हो सकते।

दूसरी: इस बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख कि काहिन की बात को सही मानना कुफ़्र है।

तीसरी: कहानत करने के साथ-साथ करवाना भी मना है।

चौथी: अपशगुन लेने वाले के साथ-साथ जिसके लिए लिया जाए, उसका भी उल्लेख है।

पाँचवीं: जादू करने वाले के साथ-साथ जादू करवाने वाले का भी उल्लेख कर दिया गया है।

किताबुत तौहीद
2

छठीं : वर्णों को लिखकर भविष्यवाणी करने का भी उल्लेख कर दिया गया है।

सातवीं : काहिन तथा अर्राफ़ में अंतर का बता दिया गया है।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : जादू -टोने के ज़रिए जादू के उपचार की मनाही

जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जादू -टोने के ज़रिए जादू के उपचार के बारे में पूछा गया , तो आपने फ़रमाया : "यह शैतान का काम है। " इस हदीस को अहमद ने उत्तम सनद से रिवायत किया है और इसी तरह अबू दाऊद ने भी इसे रिवायत किया है और कहा है कि अहमद से जादू -टोने के ज़रिए जादू के इलाज के बारे में पूछा गया , तो कहा : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरह की तमाम बातों को नापसंद करते थे।

और सहीह बुखारी में क़तादा से वर्णित है , वह कहते हैं कि मैंने इब्ने मुसय्यिब से पूछा कि यदि किसी पर जादू कर दिया गया हो या जादू आदि के कारण वह अपनी पत्नी के पास न जा पाता हो , क्या कुछ साधनों का उपयोग कर उसके जादू को तोड़ा जा सकता है या मंतर के ज़रिए उसका उपचार किया जा सकता है ?

उन्होंने उत्तर दिया : "इसमें कोई हर्ज नहीं है। इस तरह का काम करने वाले सुधार ही करना चाहते हैं। अतः जिसमें लाभ हो उससे रोका नहीं गया है। "

किताबुत तौहीद 2

तथा हसन बसरी से नक़ल किया जाता है कि उन्होंने कहा : "जादू का उपचार केवल जादूगर ही कर सकता है।"

इब्ने क़य्यिम फरमाते हैं : "النُّشْرَةُ शब्द का अर्थ है, जिसपर जादू किया गया हो, उससे जादू को उतारना। दरअसल इसके दो प्रकार हैं :

पहला : जादू ही के द्वारा जादू को उतारना। इसी को शैतान का कार्य कहा गया है और यही हसन बसरी की बात का मतलब है। यहाँ जादू उतारने वाला तथा जिससे उतारा जाता है दोनों, ऐसे कार्यों के द्वारा शैतान की निकटता प्राप्त करते हैं, जो उसे प्रिय हों और फलस्वरूप वह पीड़ित व्यक्ति पर से अपना जादू हटा देता है।

दूसरा : दुआओं, दवाओं और वैध दम आदि का उपयोग कर जादू को उतारना। जादू उतारने का यह तरीक़ा जायज़ है।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : जादू-टोने के ज़रिए जादू के उपचार से मनाही।

दूसरी : जादू के इलाज के जायज़ एवं नाजायज़ तरीकों का ऐसा अंदर जिससे सारे संदेह समाप्त हो जाते हैं।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : अपशगुन लेने की मनाही

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {أَلا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِندَ اللهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ} (उनका अपशगुन तो अल्लाह के पास है, परन्तु उनमें से अकसर लोग कुछ नहीं जानते।) [सूरा आराफ : 131]

एक अन्य स्थान में उसका फ़रमान है : {قَالُواْ طَائِرُكُم مَّعَكُمْ أَإِن ذُكِّرْتُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ} (उन्होंने कहा : तुम्हारा अपशगुन तुम्हारे साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाए (तो हमसे अपशगुन लेने लगते हो?) सच्चाई यह है कि तुम हो ही उल्लंघनकारी लोग।) [सूरा यासीन : 19]

तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "कोई रोग संक्रामक नहीं होता, अपशगुन कोई वस्तु नहीं है, उल्लू का कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता और सफ़र मास में कोई दोष नहीं है।" इस हदीस को इमाम बुख़ारी एवं इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

जबकि सहीह मुस्लिम में यह वृद्धि है : "और न नक्षत्र का कोई प्रभाव होता है और न भूतों को कोई अस्तित्व है।"

सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम ही में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद
2

दूसरी : बीमारी के (खुद से) संक्रमित होने का इनकार।

तीसरी : अपशगुन का इनकार।

चौथी : उल्लू के कुप्रभाव का इनकार।

पाँचवीं : सफर के महीने में कोई दोष होने का इनकार।

छठीं : अच्छा शगुन लेना मना नहीं है, बल्कि मुसतहब है।

सातवीं : अच्छे शगुन की व्याख्या कर दी गई है।

आठवीं : यदि इनसान अपशगुन को नापसंद करता हो, लेकिन फिर भी कभी दिल में इस तरह की बात आ जाए, तो इससे कोई नुकसान नहीं होता, बल्कि अल्लाह पर भरोसे की शक्ति से इस तरह की चीज़ें दूर हो जाती हैं।

नवीं : यह भी बता दिया गया है कि जिसके दिन अपशगुन की कोई बात आए, उसे क्या करना चाहिए?

दसवीं : इस बात की वज़ाहत कि अपशगुन लेना शिर्क है।

ग्यारहवीं : अवैध शगुन की व्याख्या भी कर दी गई है।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : ज्योतिष विद्या के बारे में शरई दृष्टिकोण

सहीह बुखारी में है कि क़तादा ने कहा : "अल्लाह ने इन तारों को तीन उद्देश्यों के तहत पैदा किया है : आसमान की शोभा के तौर पर, शैतानों को मार भगाने के लिए और दिशा मालूम करने के चिह्न के तौर पर। अतः जिसने तारों के बारे में इन बातों के अतिरिक्त कुछ और अर्थ निकाला उसने गलती की, अपना भाग नष्ट किया एवं ऐसा कुछ जानने का प्रयास किया जो उसकी पहुँच से बाहर है।" क़तादा का कथन समाप्त हुआ।

क़तादा ने चाँद के स्थानों का ज्ञान प्राप्त करने को नापसंद किया है और इब्न-ए-उययना ने भी इसकी अनुमति नहीं दी है। इस बात को उन दोनों से हर्ब ने नक़ल किया है।

जबकि अहमद तथा इसहाक़ ने इसकी अनुमति दी है।

और अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तीन प्रकार के लोग जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगे : शराब का रसिया, रिश्ते-नाते को काटने वाला और जादू को सच मानने वाला।" इसे अहमद ने तथा इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।

किताबुत तौहीद 2

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : तारों को पैदा करने में निहित हिकमत (उद्देश्य)।

दूसरी : उसका खंडन जो इसके अतिरिक्त कुछ और बयान करे।

तीसरी : चाँद के स्थानों के ज्ञान प्राप्त करने के बारे में मौजूद मतभेद का उल्लेख।

चौथी : उस व्यक्ति को सख़्त सज़ा की धमकी दी गई जो असत्य समझते हुए भी जादू की पुष्टि करे।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : नक्षत्रों के प्रभाव से वर्षा होने की धारणा रखने की मनाही

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ} (तथा नेमत का यह शुक्र अदा करते हो कि तुम झुठलाते हो?) [सूरा वाक़िआ : 82]

और अबू मालिक अल-अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "मेरी उम्मत में जाहिलियत की चार ऐसे काम हैं, जिन्हें लोग कभी नहीं छोड़ेंगे : अपने कुल की श्रेष्ठता पर गर्व करना, दूसरे के नसब पर लांछन लगाना, नक्षत्रों के प्रभाव से बारिश होने का अक़ीदा रखना और और किसी के मरने पर रोना-पीटना।"

तथा आपने फ़रमाया : "किसी के मरने पर रोने-पीटने वाली स्त्री यदि तौबा किए बिना ही मर गई, तो क़यामत के दिन इस अवस्था में उठाई जाएगी कि उसके शरीर में तारकोल का कुर्ता होगा और खुजली में मुब्तला कर देने का कपड़ा होगा।" इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम में ज़ैद बिन खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें हुदैबिया

[illegible]

[illegible]

[illegible]

المُطَهَّرُونَ أفَبِهذا الحَـــديثِ أنتُم مُّدْهِنونَ وتَجْعَلُـونَ رِزْقَكُم أنَّكَم تُكَذِّبُونَ) [: 75 - 82]

:

: :

: , :

: , :

: " " :

: :

: :

किताबुत तौहीद
2

आठवीं : आपके कथन : "अमुक तथा अमुक नक्षत्र के प्रभाव की बात सही साबित हुई। " का अर्थ समझना।

नवीं : शिक्षक का छात्र से किसी विषय के बारे में प्रश्न कर उस विषय को सामने लाना , जैसे आपने फरमाया : "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या कहा ?"

दसवीं : किसी की मृत्यु पर रोने -पीटने वाली स्त्री के लिए धमकी।

: **وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ} : {اللهِ أندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللهِ} (**
{165 :]

قُلْ إِن} : كَانَ ءآبَـاؤُكُمْ وَأَبْنَـاؤُكُمْ وإِخـوَانُكُم وأزوَاجُكُم وعَشِـيرَتُكُم وأمْـوَالٌ اقتَرَفتُمُوهَا وتِجَارةٌ تَخْشَونَ كَسَادَها وَمَسَاكِنُ تَرْضَونَها أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللهِ وَرَسُولِهِ وجِهَادٍ فِي سَبيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتى يَأتِيَ اللـهُ بِـأَمْرِهِ وَاللهُ لا يَهْدِي القَوْمَ الفَاسِقِينَ} (
: 24}

"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] {وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الأَسْبَابُ} (البقرة: 166) [illegible]

[illegible]:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

إِنَّمَا ذلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ} : وقوله تعالى {
{أَوْلِيَاءَهُ فَلاَ تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ
(ولا تخافوا أحدا, ولا تخافوا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري) [سورة آل-عمران : 175]

إِنَّمَا} : ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللهِ مَنْ ءآمَنْ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَأَقَامَ الصَّـلاَةَ وَآتَى {الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلاَّ اللهَ فَعَسَى أُوْلَـئِكَ أَن يَكُونُواْ مِنَ الْمُهْتَدِينَ (ولا تخافوا أحدا, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري) [سورة التوبة : 18]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ} : ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري يَقُولُ ءآمَنـا بِاللـهِ فَـإِذَا أُوذِيَ فِي اللـهِ جَعَـلَ فِتْنَـةَ النَّاسِ كَعَـذَابِ اللهِ} (ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري) [سورة العنكبوت : 10]

وقد جاء في الحديث الصحيح عن النبي ﷺ أنه قال : "لا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ولا تخافوا أحدا ولا شيئا غيري, ول

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

पाँचवीं : हदीस में उल्लिखित तीन चीज़ें विश्वास की दुर्बलता के चिन्ह हैं।

छठीं : केवल अल्लाह ही से डरना आवश्यक है।

सातवीं : जो ऐसा करेगा , उसे मिलने वाली नेकी का उल्लेख।

आठवीं : जो ऐसा नहीं करेगा , उसकी यातना का बयान।

وَعَلَى اللهِ فَتَوَكَّلُواْ إِن كُنتُم} : ** **مُّؤْمِنِينَ} (

إِنَّمَا} : الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيتْ عَلَيهِمْ آيَاتُـهُ زَادَتهم إيمَانًا وعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُـونَ} (

أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللـهُ ومَن اتَّبَعـكَ مِنَ المُـؤمِنِينَ} (

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى} : اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ} (

حَسْبُنا} : اللهُ ونِعْمَ الوكيلُ} (

إِنَّ النَّاسَ قَـدْ جَمَعُـواْ لَكُمْ فَاخْشَـوْهُمْ} : {فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْـبُنَا اللـهُ ونِعْمَ الوَكِيـلُ} [173 : 3] {حَسْبُنَا اللهُ ونِعْمَ الوَكِيلُ} :

किताबुत तौहीद
2

: **أَفَأَمِنُواْ مَكْرَ اللهِ فَلاَ يَأمَنْ مَكْرَ اللهِ إِلاَّ الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ}** (

? **]99 :**

: {وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلاَّ الضَّآلُّونَ} (56 :

:

:

किताबुत तौहीद 2

पहली : सूरा आराफ़ की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

दूसरी : सूरा हिज्र की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

तीसरी : उसके लिए सख़्त धमकी , जो अल्लाह की पकड़ से निश्चिंत हो जाए।

चौथी : अल्लाह की कृपा से निराश होने के संबंध में सख़्त धमकी।

: المطلب الأول: المقصود بالتوكل على الله

التوكل على الله من أعظم العبادات التي : { وَمَن يُـؤْمِن بِاللـهِ يَهْـدِ قَلْبَـهُ وَاللـهُ بِكُـلِّ شَـيْءٍ عَلِيمٌ} (قال الله تعالى) التوكل على الله من أعظم العبادات التي بها يتم العبد إيمانه، ولا يتحقق إيمان العبد إلا بتحقيق التوكل على الله) [سورة التغابن : 11]

وقال ابن القيم : "التوكل على الله هو اعتماد القلب عليه وحده، ثقة به أن يكفيه، وهو أن يعلم أن ما شاء الله كان لا بد أن يكون، وما لم يشأ لم يكن لا بد أن يكون، وأن العبد لا يملك لنفسه ولا لغيره من الله شيئا إلا ما شاء الله"

ومن أعظم الأدلة على أن التوكل عبادة قلبية لا تصرف لغير الله ما ذكره ابن القيم في تعريف التوكل حيث قال : "التوكل هو عمل القلب وهو صالح العبادات وأفضلها ، وهو نصف الدين ، لأن الدين استعانة وعبادة ، فالتوكل هو استعانته ، والإنابة هو عبادته : "فالتوكل هو عمل القلب، وهو حقيقة عبادة القلب، وهو نصف الدين، لأن الدين كله استعانة وعبادة"

किताबुत तौहीद 2

और अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जब अल्लाह अपने बंदे के साथ भलाई का इरादा करता है, तो उसे दुनिया ही में सज़ा दे देता है, तथा जब अपने बंदे के साथ बुराई का इरादा करता है, तो उसके गुनाहों की सज़ा को रोके रखता है, यहाँ तक कि वह क़यामत के दिन अपने सारे गुनाहों को पाएग। "

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "निश्चय ही बड़ा बदला बड़ी परीक्षा के साथ है। जब अल्लाह किसी क़ौम से प्रेम करता है, तो उसकी परीक्षा लेता है। अतः, जो अल्लाह के निर्णय से संतुष्ट रहेगा, उससे अल्लाह प्रसन्न होगा और जो असंतुष्टी दिखाएगा, उससे अल्लाह नाराज रहेगा। " इस हदीस को तिरमिज़ी ने हसन करार दिया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें **:**

पहली : सूरा तग़ाबुन की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

दूसरी : अल्लाह के निर्णयों को धैर्य के साथ मानना अल्लाह पर ईमान का एक भाग है।

तीसरी : किसी के कुल पर कटाक्ष करना जाहिलियत के कामों में से है।

किताबुत तौहीद
2

चौथी : जो गालों पर थप्पड़ मारे , गिरेबान के कपड़े फाड़े और जाहिलियत का कोई बोल बोले , उसके लिए सख़्त धमकी।

पाँचवीं : जब अल्लाह अपने किसी बंदे के साथ भलाई करना चाहता है , तो उसकी निशानी क्या होती है , यह बता दिया गया है।

छठीं : और जब अल्लाह किसी बंदे के साथ बुराई का इरादा करता है , तो उसकी निशानी क्या होती है , यह भी बता दिया गया है।

सातवीं : अल्लाह के किसी बंदे से प्रेम करने की निशानी।

आठवीं : मुसीबतों के समय अल्लाह के निर्णय से नाराज़ होना हराम है।

नवीं : परीक्षा की घड़ी में अल्लाह के निर्णय पर राज़ी रहने की नेकी।

: ( )

قُلْ} : إِنَّمَا أَنَاْ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُـوحَى إِلَيَّ أَنَّمَـا إِلَـهُكُمْ إِلَـهٌ وَاحِـدٌ فَمَن كَـانَ {يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيعْمَلْ عَمَلاً صَـالِحًا وَلا يُشْـرِكْ بِعِبَـادَةِ رَبِّهِ أَحَـدًا (,) ( ) [: 110]

किताबुत तौहीद 2

लोगों ने कहा : अवश्य , ऐ अल्लाह के रसूल ! आपने फ़रमाया : "छुपा हुआ शिर्क , कि कोई इनसान नमाज़ शुरू करे और किसी को देख खूब अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने लगे " इसे अहमद ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : सूरा कहफ़ की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

दूसरी : एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि किसी नेकी के कार्य में अल्लाह के सिवा किसी के लिए कुछ पाया जाए तो उसे ठुकरा दिया जाता है।

तीसरी : ठुकरा देने का कारण यह है कि अल्लाह सम्पूर्ण निस्पृह है।

चौथी : ठुकरा देने का एक अन्य कारण यह है कि अल्लाह तमाम साझियों से उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ है।

पाँचवीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सहाबा के बारे में दिखावे (रिया) का भय था।

छठीं : दिखावा (रिया) की व्याख्या आपने यह की कि कोई इनसान नमाज़ शुरू करे और किसी को देख खूब अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने लगे।

: مَن} كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لا يُبْخَسُونَ) (أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيسَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ إِلاَّ النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ} [15 -16]

किताबुत तौहीद 2

भला हो उस बंदे का जो पैरों में गर्द -
गुबार लिए एवं बिखरे बालों के साथ अपने
घोड़े की नकेल अल्लाह की राह में थामे रहे।

यदि उसे पहरेदारी की ज़िम्मेवारी दी
जाए तो वह उसे पूरा करे ,

और यदि उसे फ़ौज के पिछले भाग में रखा
जाए तो वहीं रह जाए।

यदि अनुमति चाहे तो उसे अनुमति न मिले
और यदि सिफ़ारिश करे तो उसकी सिफ़ारिश रद्द
कर दी जाए। "

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : आख़िरत के कार्य के द्वारा
दुनिया तलब करना भी शिर्क में दाखिल है।

दूसरी : सूरा हूद की उपर्युक्त आयत की
व्याख्या।

तीसरी : एक मुसलमान को दीनार , दिरहम और
रेशमी एवं ऊनी कपड़े का गुलाम कहा गया है।

चौथी : तथा इसका मतलब यह बताया गया है कि
यदि उसे दिया जाए तो राज़ी होता है और यदि न
दिया जाए तो नाराज़ हो जाता है।

पाँचवीं : आप का फ़रमानः "उसका विनाश हो
और वह नाकाम व नामुराद हो। "

छठीं : आप का फ़रमान : "और जब उसको काँटा
लग जाए , तो निकाला न जा सके। "

किताबुत तौहीद
2

सातवीं : हदीस में उल्लिखित विशेषताएँ जिस मुजाहिद के अंदर हों , उसकी प्रशंसा की गई है।

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللهِ وَالمَسِيحَ ابنَ مَرْيمَ وَمَا أُمِرُوا إِلاَّ لِيعبُدوا إِلهًا وَاحِدًا لا إِلهَ إِلاَّ هُوَ سُبحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ} (التوبة: 31) [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद
2

चौथी : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अबू बक्र तथा उमर का एवं इमाम अहमद ने सुफ़यान का उदाहरण पेश कर मसले को समझाने का प्रयास किया।

पाँचवीं : परिस्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि अधिकतर लोगों के निकट धर्माचारियों की पूजा ही उत्तम कार्य बन गई और उसे वलायत (अल्लाह का प्रिय होना) का नाम दे दिया गया, तथा विद्वानों की इबादत को इल्म और फ़िक्ह करार दे दिया गया। फिर हालत और बिगड़ी तो लोगों ने अल्लाह को छोड़ ऐसे लोगों की इबादत शुरू कर दी, जो सदाचारी भी नहीं होते और इबादत के उपर्युक्त दूसरे अर्थ के अनुसार जाहिलों की पूजा की जाने लगी।

: **أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُواْ إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُواْ أَن يَكْفُرُواْ بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلاَلاً بَعِيدًا**) : **وإذَا قِيلَ لهَم تَعَالَوا إِلَى مَا أَنزَلَ اللهُ وإِلَى الرَّسولِ رَأيتَ المُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا** **فَكَيفَ إذا أصَابَتهُم مُّصِيبةٌ بما قَدَّمتْ أَيدِيهِمْ ثمَّ جَاءوكَ {يَحْلِفونَ بِاللهِ إنْ أَرَدْنَا إلاَّ إحْسَانًا وتَوْفِيقًا** **60 - 62]**

وَإِذَا} : {قِيلَ لَهُمْ لاَ تُفْسِدُواْ فِي الأَرْضِ قَـالُواْ إِنَّمَـا نَحْنُ مُصْـلِحُونَ
وَلاَ تُفْسِدُواْ فِي} : الأَرْضِ بَعْدَ إِصْلاَحِهَا وادْعُوهُ خَوفًا وطَمَعًا إِنَّ رَحمةَ اللهِ قَرِيبٌ مِّنَ
المحسِنِينَ}
{أَفَحُكمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ومَنْ أحسَنُ مِنَ اللهِ حُكْمًا لِقَومٍ يُوقِنُـونَ
} :

[illegible] : "[illegible], [illegible] "[illegible]" [illegible] [illegible]"

[illegible] : "[illegible]"

[illegible] : [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] : [illegible]، [illegible]، [illegible]، [illegible] [illegible]

[illegible] : {أَلَمْ تَـرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُـونَ} ([illegible]...) [illegible] : 60 - 62] [illegible]

[illegible] : "[illegible]" [illegible] : "[illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : अल्लाह के किसी नाम और गुण का इनकार करना

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : { وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَــنِ قُـلْ هُـوَ رَبي لا إلَـهَ إلاَّ هُـوَ عَلَيـهِ تَـوَكَّلتُ وإليهِ مَتَـابِ} (और वे रहमान के साथ कुफ्र करते हैं। आप कह दें : वही मेरा रब है। उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं। मेरा भरोसा उसी पर है और उसी की ओर मुझे लौटना है।) [सूरा राद : 30]

और सही हबुखारी में वर्णित है कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया : "लोगों से वह बात करो जो वे समझ सकें। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह और उसके रसूल को झुटलाया जाए ?

तथा अब्दुर रज़्ज़ाक़ ने मामर से , उन्होंने इब्ने ताऊस से और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि उन्होंने एक व्यक्ति को देखा कि जैसे ही अल्लाह की विशेषताओं के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस सुनी , उसे एक अनुचित वस्तु समझते हुए काँप उठा। ऐसे में उन्होंने कहा : इन लोगों का भय कैसा है ? क़ुरआन की मुह्कम (स्पष्ट अर्थ वाली) आयतओं से , यह शीतलता और स्वीकृति की चेतना पाते हैं , लेकिन क़ुरआन की मुताशाबेह (अस्पष्ट अर्थ वाली) आयतओं को सुनकर हलाक होते हैं !"

किताबुत तौहीद 2

और जब क़ुरैश ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रहमान का उल्लेख करते हुए सुना, तो उससे बिदकने लगे। जिसपर अल्लाह ने उनके बारे में यह आयत उतारी : {وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَـنِ} (और वे रहमान के साथ कुफ्र करते हैं।) [सूरा राद : 30]

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : अल्लाह के किसी नाम और विशेषता के इनकार के कारण इनसान का ईमान खत्म हो जाता है।

दूसरी : सूरा राद की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

तीसरी : इनसान ऐसी बात नहीं करनी चाहिए, जो सुनने वाले की समझ में न आए।

चौथी : इसका कारण यह बताया गया है कि यह अल्लाह तथा उसके रसूल को झुटलाने का सबब बन सकता है, चाहे इनकार करने वाले का यह इरादा न भी रहा हो।

पाँचवीं : जो अल्लाह के किसी नाम अथवा गुण से बिदके, उसके बारे में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की उपर्युक्त बात तथा उनका यह कहना कि यह उसके विनाश का कारण है।

: **يَعْرِفُونَ نِعْمَةَ اللهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا}** **{وأكثَرُهُمُ الكَافِرُونَ**) [**: 83]**

"

किताबुत तौहीद 2

सलफ़ में से किसी ने कहा है : "जैसे लोग कहते हैं : हवा अच्छी थी और नाविक माहिर था आदि, जो कि बहुत-से लोगों की ज़बान पर चढ़ा हुआ है।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : अल्लाह की नेमत को पहचानने तथा उसका इनकार करने की तफ़सीर।

दूसरी : इस बात की जानकारी कि इस तरह की बातें बहुत-से लोगों की ज़बान पर चढ़ी होती हैं।

तीसरी : इस तरह की बातों को नेमत के इनकार का नाम दिया गया है।

चौथी : दो विपरीत वस्तुओं को दिल में एकत्र होना।

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : **{فَلاَ تَجْعَلُواْ للهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ}** (अतः, जानते हुए भी अल्लाह के साझी न बनाओ।) [सूरा बक़रा : 22]

इस आयत की तफ़सीर में अब्दुल्लाह बिन अब्बास से वर्णित है : "अनदाद का अर्थ शिर्क है, जो कि रात के अंधेरे में किसी काले पत्थर पर चलने वाली चींटी की आहट से भी अधिक गुप्त होता है।

और वह यह है कि तुम कहो : अल्लाह की क़सम और ऐ अमुक (स्त्री) तुम्हारे जीवन की क़सम और मेरे जीवन की क़सम।

किताबुत तौहीद 2

इसी तरह तुम कहो : यदि इसकी कुतिया न होती तो चोर आ जाते

और यदि घर पे बतख़ न होती तो घर में चोर घुस आते।

इसी तरह कोई अपने साथी से कहे : जो अल्लाह चाहे और तुम चाहो।

इसी तरह कोई यह कहे : यदि अल्लाह और अमुक न होता। यहाँ अमुक को मत घुसाओ। यह सब शिर्क के अंतर्गत आता है। " इसे इब्ने अबू हातिम ने रिवायत किया है।

और उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो अल्लाह के सिवा किसी और वस्तु की सौगंध खाता है , वह शिर्क करता है। " इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया है और हसन करार दिया है , जबकि हाकिम ने इसे सहीह करार दिया है।

और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "मेरे निकट अल्लाह की झूठी कसम खाना किसी और की सच्ची कसम खाने से अधिक प्रिय है। "

और हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुम 'जो अल्लाह चाहे एवं अमुक चाहे ' न कहो , बल्कि 'जो अल्लाह

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद

2

अध्याय : अल्लाह की क़सम पर बस न करने वाले के बारे में शरई दृष्टिकोण

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुम अपने बाप -दादा की क़समें न खाओ। जो अल्लाह की क़सम खाए वह सच बोले। और जिसके लिए अल्लाह की क़सम खाई जाए वह राज़ी हो जाए। और जो राज़ी न हो उसका अल्लाह से संबंध नहीं।" इस हदीस को इब्ने माजा ने हसन सनद के साथ रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : बाप -दादा की क़सम खाने से रोकना।

दूसरी : जिस के लिए अल्लाह की क़सम खाई जाए, उसे यह आदेश कि वह संतुष्ट हो जाए।

तीसरी : जो संतुष्ट न हो उस के लिए धमकी।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : "जो अल्लाह चाहे और तुम चाहो" कहने की मनाही

क़ुतैला से वर्णित है कि एक यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा : तुम लोग शिर्क करते हो।

तुम कहते हो : जो अल्लाह चाहे और तुम चाहो।

इसी तरह तुम कहते हो : काबे की क़सम।

अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को आदेश दिया कि क़सम खाते समय कहें : काबा के रब की क़सम।

साथ ही इसी तरह कहें : जो अल्लाह चाहे, फिर आप चाहें। " इसे नसई ने रिवायत किया है तथा सहीह भी करार दिया है।

इसी तरह सुनन नसई ही में अब्दुल्लाह बिन अब्बास से वर्णित है कि एक व्यक्ति ने नबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, तो आपने फरमाया : "क्या तुमने मुझे अल्लाह का साझी ठहरा दिया? केवल 'जो अल्लाह चाहे' कहो। "

तथा इब्ने माजा में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के माँ जाया भाई तुफ़ैल से वर्णित है, वह कहते हैं : "मैंने देखा कि जैसे कि मैं यहूदियों के एक दल के पास आया।

किताबुत तौहीद
2

और उनसे कहा : यदि तुम "उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं " न कहते तो तुम बड़े अच्छे लोग होते।

तो उन्होंने उत्तर दिया : और यदि तुम "जो अल्लाह तथा मुहम्मद चाहें " न कहते , तो तुम भी बड़े अच्छे लोग होते।

फिर मैं कुछ ईसाइयों के पास से गुज़रा और उनसे कहा : यदि तुम ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटे न कहते , तो तुम बड़े अच्छे लोग होते।

तो उन्होंने उत्तर दिया : और यदि तुम :जो अल्लाह तथा मुहम्मद चाहें " न कहते , तो तुम भी बड़े अच्छे लोग होते।

जब सुबह सोकर उठा , तो मैंने कुछ लोगों को इसके बारे में बताया।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर उन्हे इससे अवगत किया।

आपने पूछा : "क्या तुमने किसी को यह घटना सुनाई है ?"

मैंने कहा : जी।

तो आपने अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति करने के बाद फरमाया :

तुफैल ने एक सपना देखा है , जिसके बारे में कुछ लोगों को सूचित भी कर दिया है।

किताबुत तौहीद 2

दरअसल, तुम लोग एक बात कहते हो, जिससे अमुक अमुक कारणों से मैं तुम्हें रोक नहीं रहा था।

सो अब 'जो अल्लाह चाहे एवं मुहम्मद चाहे' न कहो, बल्कि केवल 'जो अल्लाह चाहे' कहो।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : यहूदियों के पास छोटे शिर्क की भी जानकारी थी।

दूसरी : इनसान की इच्छा हो तो वह सत्य एवं असत्य को मालूम कर सकता है।

तीसरी : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी को केवल "जो अल्लाह चाहे और आप चाहें" कहने पर कह दिया : "क्या तुमने मुझे अल्लाह का साझी बना दिया?" तो उसके बारे में आप क्या कहते, जो कहता है :

(ऐ नबी) आपके सिवा मैं किस की शरण लूँ? साथ ही इसके बद की दो पंक्तियाँ?

चौथी : "जो अल्लाह चाहे और आप चाहें" बड़ा शिर्क नहीं है, क्योंकि आपने फरमाया : "अमुक-अमुक कारणों से मैं तुम्हें रोकता नहीं था।"

पाँचवीं : अच्छा सपना वह्य का एक भाग है।

छठीं : अच्छे सपने कभी-कभी कुछ अहकाम के आधार बन जाते हैं।

□□

किताबुत तौहीद
2

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : ज़माने को बुरा-भला कहना दरअसल अल्लाह को कष्ट देना है

उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है : {وَقَالُواْ مَا هِيَ إِلاَّ حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلاَّ الدَّهْرُ وَمَا لهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إنْ هُمْ إلاَّ يَظُنُّونَ} (तथा उन्होंने कहा कि हमारा जीवन तो बस यही सांसारिक जीवन है। हम यहीं मरते और जीते हैं और हमारा विनाश युग (काल) ही करता है। दरअसल वे इसके बारे में कुछ जानते ही नहीं। वे केवल अनुमान की बात कर रहे हैं।) [सूरा जासिया : 24]

और सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में अबु हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह तआला ने फ़रमाया : आदम की संतान मुझे कष्ट देती है। वह ज़माने को गाली देती है। जबकि मैं ही ज़माने (का मालिक) हूँ। मैं ही रात और दिन को पलटता हूँ।"

एक रिवायत में है : "काल को बुरा-भला न कहो; क्योंकि अल्लाह ही काल (का मालिक) है।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : ज़माने को गाली देने की मनाही।

दूसरी : इसे अल्लाह को तकलीफ़ पहुँचाने का नाम दिया गया है।

तीसरी : आप के कथन : "अल्लाह ही ज़माना (का मालिक) है।" पर विचार करना चाहिए।

किताबुत तौहीद

2

चौथी : कभी-कभार मनुष्य अल्ललाह को गाली देने वाला हो जाता है , यद्यपि उसने इसका इरादा न किया हो।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : क़ाज़ी अल-क़ुज़ात (जजों का जज) आदि उपाधियों के संबंध में शरई दृष्टिकोण

सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह के निकट सबसे घटिया और तुच्छ व्यक्ति वह है, जो मलिकुल अमलाक (अर्थाथ : शहनशाह) नाम रख ले। वास्तविक बादशाह तो बस अल्लाह है।"

सुफयान कहते हैं : "जैसे शाहनशाह।"

और एक रिवायत में है : 'क़यामत के दिन अल्लाह के निकट सबसे बुरा इनसान एवं क्रोध का पात्र व्यक्ति।"

आपके शब्द "أَخْنَعُ" का अर्थ है सबसे घटिया।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : "मलिकुल अमलाक" (शहनशाह) उपाधि धारण करने की मनाही।

दूसरी : इस मनाही के अंदर इस तरह की अर्थों वाली सारी उपाधियाँ शामिल हैं।

तीसरी : इस तरह की उपाधियों के मामले में जो सख़्ती बरती गई है, उसपर ध्यान देने की आवश्यकता है, जबकि उन्हें बोलते समय दिल में उस तरह का अर्थ होता नहीं है।

किताबुत तौहीद
2

चौथी : इस बात को भी समझने की आवश्यकता है कि यह मनाही दरअसल पवित्र एवं महान अल्लाह के सम्मान में है।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के नामों का सम्मान और इसके कारण नाम में परिवर्तन

अबू शुरैह से वर्णित है कि उनकी कुनयत (जैसे अमुक के पिता) अबुल -हकम (हकम के पिता) थी , तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा : "अल-हकम (फैसला करने वाला) केवल अल्लाह है और सारे फैसले भी वही करता है। "

तो उन्होंने कहा : मेरी क़ौम के लोगों में जब कोई झगड़ा होता है , तो वे मेरे पास आते हैं और मैं उनके बीच फैसला कर देता हूँ और लोग संतुष्ट हो जाते हैं।

आपने कहा : "यह तो बड़ी अच्छी बात है। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे बच्चों के क्या नाम हैं ?"

मैंने कहा : शुरैह , मुस्लिम और अब्दुल्लाह।

आपने पूछा : "सबसे बड़ा कौन है ?"

मैंने कहा : शुरैह।

तो आपने फ़रमाया : "तो तुम अबू शुरैह हो। " इस हदीस को अबू दाऊद आदि ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : अल्लाह के नामों तथा गुणों का सम्मान करना , यद्यपि उनके अर्थ का इरादा न हो ।

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : अल्लाह के नामों एवं गुणों में नाम में परिवर्तन करना।

तीसरी : कुनयत के लिए बड़े बेटे का चयन करना।

: , .

{ : وَلَئِن سَـأَلْتَهُمْ لَيَقُـولُنَّ إِنَّمَـا كُنَّا نَخُـوضُ وَنَلْعَبُ قُـلْ أَبِاللـهِ وآيَاتِـهِ ورسُـولِهِ كُنْتُم تَسـتَهْزِئونَ} ( ) [: 65]

( ) .

( ) .

( ) .

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : उस आयत की यही सटीक व्याख्या है कि जो भी ऐसा करेगा वह काफिर होगा।

तीसरी : चुगली करने और अल्लाह एवं उसके रसूल का हिताकांक्षी होने में अंतर है।

चौथी : क्षमा , जो अल्लाह को पसंद है , एवं अल्लाह के दुश्मनों के साथ सख़्ती करने में अंतर है।

पाँचवीं : किसी गलत काम को सही ठहराने के लिए पेश किए जाने वाले कुछ कारण ऐसे भी होते हैं कि उन्हें ग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

जबकि अन्य विद्वानों ने कहा है : "यह सब कुछ मुझे इस आधार पर मिला है, क्योंकि अल्लाह जानता है कि मैं इसका योग्य हूँ।"

और यही मुजाहिद के इस कथन के मायने हैं कि : "यह मुझे मेरे सम्मान के आधार पर मिला है।"

तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हुए सुना है : कि बनी इसराईल में तीन व्यक्ति थे : सफ़ेद दाग वाला, गंजा और अंधा।

अल्लाह ने उनकी परीक्षा के लिए उनके पास एक फरिश्ता भेजा।

फरिश्ता सफ़ेद दाग वाले के पास आया और उससे पूछा : तुम्हें कौन-सी चीज़ सबसे अधिक पसंद है ?

उसने कहा : अच्छा रंग एवं सुंदर त्वचा और जिस कारण मुझसे लोग घृणा करते हैं वह दूर हो जाए।

आप फ़रमाते हैं : तो फ़रिश्ते ने उसके शरीर पर हाथ फेरा और उसकी बीमारी दूर हो गई। अतः उसे अच्छा रंग तथा सुंदर त्वचा प्रदान किया गया।

फिर फरिश्ते ने पूछा : कौन-सा धन तुम्हारे निकट सबसे अधिक प्रिय है ?

किताबुत तौहीद 2

उसने कहा : ऊँट अथवा गाय। इस हदीस के वर्णनकर्ता इसहाक़ को शक है कि ऊँट कहा कहा था या गया। अतः उसे एक दस मास की गाभिन ऊँटनी दे दी गई।

साथ ही फ़रिश्ते ने कहा : अल्लाह इसमें तुम्हें बरकत दे।

आप फ़रमाते हैं : फिर वह फरिश्ता गंजा के पास पहुँचा।

और उससे पूछा : तुम्हें कौन -सी चीज़ सबसे अधिक पसंद है ?

गंजे ने कहा : अच्छे बाल और यह कि जिस बीमारी के कारण लोग मुझसे घृणा करते हैं वह दूर हो जाए।

अतः, फरिश्ते ने उसके शरीर पर हाथ फेरा और उसकी बीमारी दूर हो गई। फिर उसे अच्छे बाल प्राप्त हुए।

उसके बाद फरिश्ते ने उससे पूछा : कौन-सा धन तुम्हारे निकट सबसे अधिक प्रिय है ?

कहा : गाय अथवा ऊँट। अतः उसे एक गाभिन गाय दे दी गई।

फिर फ़रिश्ते ने कहा : अल्लाह इसमें तुम्हें बरकत दे।

फिर फरिश्ता अंधे के पास आया

किताबुत तौहीद 2

और उससे पूछा : तुम्हें कौन-सी चीज़ सबसे अधिक पसंद है ?

उसने कहा : मुझे सबसे ज़्यादा यह पसंद है कि अल्लाह मुझे मेरी आंखें लौटा दे और मैं लोगों को देख सकूँ। फरिश्ते ने उसपर हाथ फेरा, तो अल्लाह ने उसे आंखों की रौशनी वापस कर दी।

फिर फरिश्ते ने पूछा : कौन-सा धन तुम्हारे निकट सबसे अधिक प्रिय है ?

उसने कहा : बकरी।

अतः उसे एक बच्चा देने वाली बकरी दे दी गई। फिर गाय, ऊँट तथा बकरी, इन सब के बहुत सारे बच्चे हुए।

अब एक के पास वादी भर ऊँट, दूसरे के पास वादी भर गाय एवं तीसरे के पास वादी भर बकरियाँ थीं।

आप फ़रमाते हैं : फिर वह फरिश्ता अपने (पहली बार वाले) रूप और पहनावे में सफ़ेद दाग वाले के पास आया और कहने लगा कि मैं एक निर्धन व्यक्ति हूँ, यात्रा में हूँ और मेरे सारे साधन तथा सामान समाप्त हो चुके हैं। ऐसे में, यदि अल्लाह फिर आपकी मदद का सहारा न मिला, तो अब मैं घर नहीं पहुँच सकता।

मैं आपसे उस अल्लाह का वास्ता देकर अपना सफ़र पूरा करने के लिए एक ऊँट माँगता हूँ,

किताबुत तौहीद 2

जिसने आपको अच्छा रंग , सुंदर त्वचा एवं धन प्रदान किया है।

लेकिन उसने कहा : मुझपर बहुत -से अधिकार हैं।

तो फरिश्ते ने उससे कहा : लगता है मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम वही सफ़ेद दाग़ वाले हो ना , जिससे लोग घृणा करते थे और वही निर्धन हो ना , जिसे अल्लाह ने (अपनी कृपा से) धनवान बनाया ?

उसने उत्तर दिया : यह धन मुझे मेरे बाप -दादा से विरासत में मिला है।

फरिश्ते ने कहा : यदि तुम झूट बोल रहे हो तो अल्लाह तुम्हें वैसा ही बना दे जैसे तुम पहले थे।

आप फ़रमाते हैं : फिर वह फरिश्ता गंजे के पास अपने (पहली बार वाले) रूप और पहनावे में आया।

दोनों के बीच वही वार्तालाप हुई जो उसके और सफ़ेद दाग वाले के बीच हुई थी।

अतः, फरिश्ते ने उससे कहा : यदि तुम झूट बोल रहे हो , तो अल्लाह तुम्हें वैसा ही बना दे , जैसे तुम पहले थे।

आप फ़रमाते हैं : फिर वह फरिश्ता अपने (पहली बार वाले) रूप और पहनावे में अंधे के पास आया और कहने लगा कि मैं एक गरीब इनसान

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद 2

चौथी : उपर्युक्त घटना में बहुत सारी शिक्षा की बातें हैं।

: [illegible] **فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلاَ لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالى اللهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ{** : [illegible] (**[illegible]**) [illegible] **[illegible] : 190]**

: "[illegible] (-[illegible]) [illegible], [illegible] [illegible] (-[illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद 2

"उन्हें डर था कि कहीं इनसान के सिवा कुछ और न जन्म ले ले। "

उन्होंने कुछ इसी तरह की बातें हसन और सईद से भी नक़ल की हैं।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : हर वह नाम हराम है , जिसमें व्यक्ति को अल्लाह के सिवा किसी और का बंदा करार दिया गया हो।

दूसरी : सूरा आराफ़ की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

तीसरी : वास्तविक अर्थ मुराद लिए बिना केवल इस तरह का नाम रखना ही शिर्क है।

चौथी : किसी को संपूर्ण बच्ची प्रदान करना भी नेमत है।

पाँचवीं : इस बात का उल्लेख कि सलफ यानी सदाचारी पूर्वज अनुसरण में शिर्क तथा इबादत में शिर्क की बीच अंतर करते थे।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : **{وَللهِ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ}** (और अल्लाह के बेहद अच्छे नाम हैं। अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों के संबंध में (इलहाद अर्थात) गलत रास्ता अपनाते हैं।) [सूरा आराफ़ : 180]

इब्ने अबू हातिम ने अल्लाह के कथन : {يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ} (उसके नामों के संबंध में गलत रास्ता अपनाते हैं।) का अर्थ अब्दुल्लाह बिन अब्बास से वर्णन किया है कि उन्होंने फरमाया : "उसके नामों के मामले में शिर्क करते हैं।"

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास ही से वर्णित है कि वह कहते हैं : "उन्होंने लात का नाम अल-इलाह से एवं उज़्ज़ा का नाम अल-अज़ीज़ से लिया है।"

तथा आमश उक्त आयत का अर्थ बयान करते हुए कहते हैं : "वे अल्लाह के नामों में वह चीज़ें दाखिल करते हैं, जिनका संबंध उसके नामों से नहीं हैं।"

इस अध्याय के मसायल :

पहली : अल्लाह के नामों को साबित करना।

दूसरी : अल्लाह के सारे नाम बेहद अच्छे हैं।

किताबुत तौहीद 2

तीसरी : अल्लाह को उसके नामों से पुकारने का आदेश।

चौथी : गलत रास्ता अपनाने वाले मूर्खों को छोड़कर आगे बढ़ने का आदेश।

पाँचवीं : अल्लाह के नामों में "इलहाद " की व्याख्या।

छठीं : अल्लाह के नामों के मामले में गलत रास्ता अपनाने वाले को धमकी।

[illegible] : "[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : "ऐ अल्लाह ! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ कर दे !" कहने की मनाही

सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुममें से कोई यह न कहे कि 'ऐ अल्लाह ! अगर तू चाहे मुझे क्षमा कर दे', 'ऐ अल्लाह ! यदि तू चाहे मुझ पर दया कर।' बल्कि पूरे विश्वास और भरोसे के साथ दुआ करे, क्योंकि अल्लाह पर कोई दबाव डालने वाला नहीं है।"

और सहीह मुस्लिम में है : "और पूरी चाहत के साथ माँगे; क्योंकि कोई भी चीज़ जो अल्लाह देता है, वह अल्लाह के लिए बड़ी और कठिन नहीं होती।"

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : दुआ करते समय अपवाद सूचक (जैसे यदि तू चाहे आदि) शब्दों का प्रयोग करने की मनाही।

दूसरी : इस मनाही का कारण भी बता दिया गया है।

तीसरी : अपके शब्द : "आदमी को चाहिए कि पूरे विश्वास के साथ माँगे।" पर ध्यान आकृष्ट करना।

चौथी : पूरी चाहत के साथ माँगने का आदेश दिया गया है।

किताबुत तौहीद

2

पाँचवीं : पूरी चाहत के साथ माँगने के आदेश का कारण भी बता दिया गया है।

[illegible] : "عَبْدِي" (كلمة [illegible]) [illegible] "أَمَتي" [illegible] (كلمة [illegible])

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

करना , यहाँ तक कि शब्दों के चयन के मामले में भी।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : अल्लाह का वास्ता देकर माँगने वाले को खाली हाथ वापस न किया जाए

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो अल्लाह का वास्ता देकर शरण माँगे, उसे शरण दो ; जो अल्लाह का वास्ता देकर कुछ माँगे, उसे प्रदान करो ; जो तुम्हें आमंत्रित करे उसका आमंत्रण ग्रहण करो ; जो तुमपर कोई एहसान करे, उसे उसका बदला दो, और यदि तुम्हारे पास कुछ न हो, तो उसके लिए इतनी दुआ करो कि तुम्हे लगे तुमने उसका बदला चुका दिया है।" इसे अबू दाऊद और नसई ने सही सनद के साथ रिवायत किया है।

इस अध्याय के मसायल :

पहली : अल्लाह का वास्ता देकर शरण माँगने वाले को शरण देने का आदेश।

दूसरी : अल्लाह का वास्ता देकर माँगने वाले को देने का आदेश।

तीसरी : आमंत्रण स्वीकार करने का आदेश।

चौथी : किसी ने कोई एहसान किया हो, तो उसका बदला चुकाने का प्रयास होना चाहिए।

पाँचवीं : यदि कोई एहसान का बदला चुका न सके, तो उसे एहसान करने वाले के हक़ में दुआ करनी चाहिए।

किताबुत तौहीद 2

छठीं : आपके शब्द : "उसके लिए इतनी दुआ करो कि तुम्हे लगे तुमने उसका बदला चुका दिया है। " ग़ौर करने योग्य हैं।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : अल्लाह का का वास्ता देकर जन्नत के सिवा कुछ न माँगा जाए

जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह के चेहरे का वास्ता देकर जन्नत के सिवा कुछ नहीं माँगा जाएगा। " इस हदीस को अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : इस बात की मनाही कि अल्लाह के चेहरे का वास्ता देकर सबसे बड़े एवं अंतिम उद्देश्य के सिवा कुछ और माँगा जाए।

दूसरी : इससे अल्लाह के चेहरा होने का सबूत मिलता है।

किताबुत तौहीद

2

अध्याय : किसी परेशानी के बाद "यदि " शब्द प्रयोग करने की मनाही

अल्लाह तआला का फ़रमान है : {يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الأَمْـرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَـا هَـاهُنَا} (कहते हैं कि यदि हमारे अधिकार में कुछ होता तो हम यहाँ मारे न जाते।) [सूरा आल -ए-इमरान : 154]

एक अन्य स्थान में उसका फ़रमान है : {الَّذِينَ قَالُواْ لإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُواْ لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا} (जो बैठे रह गए और अपने भाइयों के संबंध में कहा कि यदि वे हमारी बात मानते तो एसे मारे न जाते।) [सूरा आल-ए-इमरान : 16]

सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अपने लाभ की चीज़ के इच्छुक बनो तथा अल्लाह तआला से सहायता माँगो और कदापि विवश होकर न बैठो। यदि तुम्हें कोई विपत्ति पहुँचे तो यह न कहो कि 'यदि ' मैंने ऐसा किया होता तो ऐसा और ऐसा होता। बल्कि यह कहो कि "قدر الله وما شاءفعل" (अर्थात अल्लाह तआला ने ऐसा ही भाग्य में लिख रखा था और वह जो चाहता है , करता है।) क्योंकि ‘यदि ’ शब्द शैतान के कार्य का द्वार खोलता है। "

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : सूरा आल -ए-इमरान की उपर्युक्त दोनों आयतों की तफ़सीर।

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : किसी आपदा के आने पर "यदि " शब्द प्रयोग करने की स्पष्ट मनाही।

तीसरी : इसका कारण यह बताया गया है कि यह शब्द शैतान के कार्य का द्वार खोल देता है।

चौथी : उसके स्थान पर एक अच्छी बात कहने का आदेश दिया गया है।

पाँचवीं : लाभ की चीज़ का इच्छुक बनने तथा अल्लाह से मदद माँगने का आदेश दिया गया है।

छठीं : विवशता दिखाने से मना किया गया है।

अध्याय : हवा तथा आँधी को गाली देने की मनाही

उबय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "वायु को गाली मत दो। यदि कोई ऐसी बात देखो , जो पसंद न हो तो कहो : ऐ अल्लाह ! हम तुझसे माँगते हैं इस वायु की भलाई , इसमें जो कुछ है उसकी भलाई और इसे जिसका आदेश दिया गया है उसकी भलाई। तथा ऐ अल्लाह ! हम तुझसे शरण माँगते हैं इस वायु की बुराई से , इसमें जो कुछ है उसकी बुराई से और इसे जिसका आदेश दिया गया है उसकी बुराई से। " इस हदीस को तिरमिज़ी ने सहीह करार दिया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

किताबुत तौहीद 2

पहली : वायु को गाली देने की मनाही।

दूसरी : किसी अनचाही चीज़ को देखते समय लाभदायक बात करने का निर्देश दिया गया है।

तीसरी : इस बात का निर्देश कि हवा भी अल्लाह के आदेश की अधीन होती है।

चौथी : कभी उसे अच्छाई तो कभी बुराई का आदेश होता है।

: [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद
2

दूसरी : सुरा हिज्र की उपर्युक्त आयत की व्याख्या।

तीसरी : इस बात का स्पष्ट उल्लेख कि इसके बहुत -से रूप हैं।

चौथी : इससे वही बच सकता है जो स्वयं के बारे में जानता हो एवं उसे अल्लाह तआला के नामों तथा गुणों का भी ज्ञान हो।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : तक़दीर का इनकार करने वालों के बारे में शरई दृष्टिकोण

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं : "उसकी क़सम जिसके हाथ में उमर के बेटे की जान है। यदि किसी के पास उहुद पर्वत के बराबर सोना हो और वह उसे अल्लाह की राह में दान कर दे, तो अल्लाह उसका दान तब तक क़बूल नहीं करेगा, जब तक वह तक़दीर पर ईमान न लाए।" फिर उन्होंने प्रमाण के तौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस सुनाई : "ईमान यह है की तुम अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अंतिम दिन तथा अच्छे एवं बुरे भाग्य पर ईमान लाओ।" इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

और उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने अपने बेटे से कहा : ऐ मेरे बेटे, तुम्हें तब तक ईमान का स्वाद नहीं मिल सकता, जब तक तुम्हें इस बात का यक़ीन न हो कि जो तुम्हारे साथ हुआ वह तुमसे चूकने वाला नहीं था औ जो तुमसे चूक गया वह तुम्हारे साथ होने वाला नहीं था। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है : "सबसे पहले अल्लाह ने क़लम की रचना की और उससे कहा : लिख। उसने कहा : मेरे रब, क्या लिखूँ?

कहा : क़यामत तक अस्तित्व में आने वाली हर वस्तु की तक़दीर लिख।"

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

किताबुत तौहीद
2

वह कहते हैं : मैं इसके बाद अब्दुल्लाह बिन मसऊद , हुज़ैफ़ा बिन यमान और ज़ैद बिन साबित के पास गया , तो हर एक ने मुझे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले से इसी तरह की हदीस सुनाई। यह हदीस सहीह है , इसे हाकिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : इस बात का उल्लेख कि तक़दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

दूसरी : इस बात का बयान कि तक़दीर पर ईमान कैसे लाना है।

तीसरी : जो तक़दीर पर ईमान न लाए , उसके सारे अमल बर्बाद हो जाएँगे।

चौथी : इस बात की सूचना कि तक़दीर पर ईमान लाए बिना किसी को ईमान का स्वाद नहीं मिलता।

पाँचवीं : अल्लाह की सबसे पहली रचना का उल्लेख।

छठीं : क़लम ने आदेश मिलते ही क़यामत तक होने वाली सारी चीजें लिख दीं।

सातवीं : तक़दीर पर ईमान न रखने वाले से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने बरी होने की बात कही है।

आठवीं : सलफ़ (सदाचारी पूर्वजों) की आदत थी कि वे उलेमा से प्रश्न पूछकर संदेह दूर

किताबुत तौहीद
2

कर लेते थे और इसी पर इब्ने दैलमी ने अमल किया।

नवीं : उलेमा ने भी उन्हें ऐसा उत्तर दिया कि उनका संदेह दूर हो जाए और इसके लिए उन्होंने अपनी बोत को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की ओर मनसूब किया।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : चित्र बनाने वालों के बारे में शरई दृष्टिकोण

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो मेरी रचना की तरह पैदा करने की कोशिश करता है, (अगर हो सके तो) वे एक कण या एक दाना या एक जौ ही पैदा करके दिखाएँ।" इस इमाम बुख़ारी तथा इमाम मुस्लिम रिवायत किया है।

बुखारी तथा मुस्लिम ही में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "क़यामत के दिन सबसे अधिक कठोर यातना उन लोगों को होगी, जो अपनी रचना में अल्लाह की रचना से समानता करते हैं।"

तथा बुखारी एवं मुस्लिम में ही अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "हर तस्वीर बनाने वाला नरक में जाएगा, उसकी बनाई हुई हर तस्वीर के बदले एक प्राण बनाया जाएगा, जिसके द्वारा उसे नरक में यातना दिया जाएगी।"

इसी तरह बुख़ारी एवं मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु

किताबुत तौहीद 2

अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो दुनिया में कोई चित्र बनाएगा , उसे क़यामत के दिन यह आदेश होगा कि उसमें आत्मा डाले और वह ऐसा कर नहीं पाएगा। "

जबकि सहीह मुस्लिम में अबुल हय्याज से वर्णित है , वह कहते हैं : मुझसे अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : "क्या मैं तुम्हें उस मुहिम पर न भेजूँ , जिसपर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे भेजा था ? आपने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हें जो भी चित्र मिले , उसे मिटा डालना और जो भी ऊँची क़ब्र मिले , उसे बराबर कर देना। "

इस अध्याय की मुख्य बातें **:**

पहली : चित्र बनाने वालों के संबंध में बड़ी सख़्त चेतावनी।

दूसरी : इसका कारण यह बताया गया है कि यह अल्लाह के साथ बेअदबी है। क्योंकि एक हदीस के अनुसार अल्लाह कहता है : {उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो मेरे पैदा करने की तरह पैदा करने की कोशिश करता है। }

तीसरी : अल्लाह के सामर्थ्य तथा लोगों की विवशता का उल्लेख , क्योंकि एक हदीस के अनुसार अल्लाह कहता है : "वे एक कण अथवा एक दाना अथवा एक जौ ही पैदा करके दिखा दें। "

किताबुत तौहीद
2

चौथी : इस बात का स्पष्ट उल्लेख कि ऐसे लोगों को सबसे कठोर यातना का सामना होगा।

पाँचवीं : अल्ला तआला हर तस्वीर के बदले एक प्राण पैदा करेगा , जिसके द्वारा तस्वीर बनाने वाले को नरक में यातना दिया जाएगा।

छठीं : चित्र बनाने वाले से कहा जाएगा कि तस्वीर में जान डाले।

सातवीं : तस्वीर कहीं मिले , तो उसे मिटा डालने का आदेश।

: ﷺ

{وَاحْفَظُواْ أَيْمَانَكُمْ} ( ) [: 89]

ﷺ : "

ﷺ : "

ﷺ : "

"[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

तीसरी : जो क़सम खाए बिना क्रय-विक्रय नहीं करता, उसके लिए बड़ी सख़्त चेतावनी।

चौथी : इस बात का बयान कि जहाँ पाप का कारण साधारण हो, वहाँ उसका गुनाह बढ़ जाता है।

पाँचवीं : उन लोगों की निंदा की गई है, जो क़सम तलब किए बिना ही क़सम खाते हैं।

छठीं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन अथवा चार युगों की प्रशंसा की है और उसके बाद जो कुछ होना था, उसका भी उल्लेख कर दिया है।

सातवीं : उन लोगों की निंदा की गई है, जो गवाही तलब किए बिना ही गवाही देते हैं।

आठवीं : इस बात का ज़िक्र कि सलफ़ (सहाबा और ताबिईन) गवाही और वचन देने पर बच्चों को मारा करते थ।

: ... ...
... ...

... ...

[illegible]

[illegible]:

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible] : "[illegible]"

[illegible] : [illegible] : "[illegible]"

[illegible] : [illegible] : "[illegible]"

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

किताबुत तौहीद
2

: [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

किताबुत तौहीद 2

चौथी : इस हदीस से , उस हदीस की पुष्टि होती है , जिसमें है कि : "आदमी कोई बात करता है ..." पूरी हदीस देखें।

पाँचवीं : कभी-कभी इनसान को किसी ऐसे काम की वजह से क्षमा प्राप्त हो जाती है , जो उसे बड़ा नापसंद था।

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : अल्लाह को किसी के सामने सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने की मनाही

जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक देहाती नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा : ऐ अल्लाह के रसूल ! लोगों पर दुर्बलता छा गई है, परिवार भूक का शिकार है और माल-धन बर्बाद हो गए हैं, अतः आप अपने रब से हमारे लिए बारिश की दुआ करें। हम आपके सामने अल्लाह को और अल्लाह के सामने आपको सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह सुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह" आप इतनी देर तक सुबहानल्लाह कहते रहे कि इसका प्रभआव सहाबा के चेहरों पे नज़र आने लगा। फिर आपने फ़रमाया : "तुझपर आफसोस है, तुझे मालूम है कि अल्लाह कौन है ? अल्लाह का सम्मान इससे कहीं अधिक है। उसे किसी के सामने सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।" फिर आगे पूरी हदीस ज़िक्र की। इसे अबू दाउद ने रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें :

पहली : आपने उस व्यक्ति का खंडन किया, जिसने कहा : "हम अल्लाह को आपके सामने सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं।"

किताबुत तौहीद 2

दूसरी : इस वाक्य से आपके चेहरा यूँ परिवर्तित हुआ कि आपके सहाबा के चेहरों में उसका असर देखा गया।

तीसरी : आपने उस देहाती की इस बात का खंडन नहीं किया कि : "हम आपको अल्लाह के सामने सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। "

चौथी : सुबहानल्लाह की व्याख्या की ओर ध्यान आकृष्ट करना।

पाँचवीं : मुसलमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बारिश की दुआ करवाते थे।

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : इस बात का उल्लेख कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौहीद की सुरक्षा की एवं शिर्क तक ले जाने वाले हर रास्ते को बंद किया

अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं बनू आमिर के एक शिष्टमंडल के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और हमने कहा : आप हमारे सय्यिद (सरदार , मालिक) हैं।

यह सुन आपने कहा : "सय्यिद तो बस बरकत वाला एवं महान अल्लाह है। "

हमने कहा : आप हमारे अंदर सबसे उत्तम व्यक्ति एवं महान हैं।

आपने फरमाया : "यह बातें या इनमें से कुछ बातें कहो , और ध्यान रहे कि शैतान तुम्हे किसी भी अवस्था में गलत रह पर न डाल सके। " इसे अबू दाऊद ने उत्तम सनद के साथ रिवायत किया है।

और अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि कुछ लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल , ऐ हममें उत्तम और हममें उत्तम व्यक्ति के बेटे , हमारे सय्यिद (सरदार , मालिक) और हमारे सय्यिद (सरदार , मालिक) के बेटे। तो फरमाया : "लोगो , तुम अपनी बात कहो , लेकिन शैतान तुम्हें गलत राह की ओर न ले जाए। मैं मुहम्मद हूँ , अल्लाह का बंदा ओर उसका रसूल।

किताबुत तौहीद
2

मुझे यह पसंद नहीं कि जो स्थान सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने मुझे प्रदान किया है, तुम मुझे उससे आगे बढ़ाओ।" इसे नसई ने उत्तम सनद के साथ रिवायत किया है।

इस अध्याय की मुख्य बातें **:**

पहली : इसमें लोगों को अतिशयोक्ति से सावधान किया गया है।

दूसरी : जिसे हमारे सय्यिद कहा जाए, उसे क्या कहना चाहिए?

तीसरी : आपने फ़रमाया : "तुम्हें शैतान गुमराह न करे।" हालाँकि उन्होंने कोई गलत बात नहीं कही थी।

चौथी : आपका फ़रमान : "मुझे यह पसंद नहीं कि जो स्थान अल्लाह ने मुझे प्रदान किया है, तुम मुझे उससे आगे बढ़ाओ।"

: قال الله تعالى

{وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالأَرْضُ جَمِيعـًا قَبْضَـتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِّيَاتٌ بِيَمِينِهِ سُبحَانَهُ وَتَعالى عَمَّا يُشْرِكُونَ}

[سورة الزمر : 67]

: عن ابن مسعود رضي الله عنه قال

" ، ، ،

[illegible] [illegible] [illegible] [

□□□

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किताबुत तौहीद 2

ग्यारहवीं : अर्श , कुर्सी और पानी के अलावा एक तीसरी चीज़ है।

बारहवीं : हर दो आसमानों के बीच की दूरी।

तेरहवीं : सातवें आसमान और कुर्सी के बीच की दूरी।

चौदहवीं : कुर्सी और पानी के बीच की दूरी।

पंद्रहवीं : अर्श पानी के ऊपर है।

सोलहवीं : अल्लाह तआला अर्श के ऊपर है।

सत्रहवीं : आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी।

अठारहवीं : हर आसमान की मोटाई पाँच सौ साल की दूरी के बराबर है।

उन्नीसवीं : आसमानों के ऊपर जो समुद्र है , उसके निचले तथा ऊपरी भाग के बीच की दूरी पाँच सौ साल की है। और अल्लाह को अधिक ज्ञान है।

उच्च एवं महान अल्लाह के अनुग्रह से किताबुत तौहीद सम्पन्न हुई।

[illegible]

[illegible].....3
[illegible] :.....5
[illegible] : [illegible].....8
[illegible] :.....9
[illegible] : [illegible].....11
[illegible] :.....12
[illegible] : [illegible].....14
[illegible] :.....14
[illegible] : [illegible].....16
[illegible] :.....17
[illegible] : [illegible].....20
[illegible] :.....21
[illegible] : [illegible].....23
[illegible] :.....23
[illegible] : [illegible].....25
[illegible] :.....26

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : पेड़ या पत्थर आदि से बरकत हासिल करने की मनाही 27
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................27
अध्याय : अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए जानवर ज़बह करने की मनाही 31
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................32
अध्याय : जहाँ अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर जानवर ज़बह किया जाता हो, वहाँ अल्लाह के नाम पर ज़बह करने की मनाही 34
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................34
अध्याय : अल्लाह के सिवा किसी और के लिए मन्नत मानना शिर्क है 36
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................36
अध्याय : अल्लाह के सिवा किसी और की शरण माँगना शिर्क है 36
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................37
अध्याय : अल्लाह के सिवा किसी से फ़रियाद करना या उसे पुकारना शिर्क है 38
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................39
अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {أَيُشْرِكُونَ مَا لاَ يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُـونَ} (क्या वह ऐसों को साझी ठहराते हैं जो किसी चीज़ को पैदा न कर सकें और वह स्वयं ही पैदा किए गए हों? {وَلاَ يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا ولا أَنفُسَهُمْ يَنصُـرُونَ} (और न वह उनकी किसी प्रकार की सहायता कर सकते हैं और न स्वयं अपनी सहायता करने की शक्ति रखते हैं।) [सूरा आराफ़ : 191-192]..................................41
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................42

حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُواْ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ} : {قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ
44.....[23 :]

45.....:

47.....

49.....:

إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللهَ يَهْدِي مَن يَشَاء} : {وَهُوَ أَعْلَمُ بِالمُهتَدِينَ
50.....[56 :]

51.....:

53.....

54.....:

57.....?!

58.....:

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : सदाचारियों की कब्रों के संबंध में अतिशयोक्ति उन्हें अल्लाह के सिवा पूजे जाने वाले बुतों में शामिल कर देती है 61

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................61

अध्याय : मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तौहीद की सुरक्षा करना एवं शिर्क की ओर ले जाने वाले हर रास्ते को बंद करना 63

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................63

अध्याय : इस उम्मत के कुछ लोगों का बुतपरस्ती में पड़ना 65

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................66

अध्याय : जादू का वर्णन 69

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................70

अध्याय : जादू के कुछ प्रकार 71

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................72

अध्याय : काहिन तथा इस प्रकार के लोगों के बारे में शरई दृष्टिकोण 73

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................74

अध्याय : जादू -टोने के ज़रिए जादू के उपचार की मनाही 75

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................76

अध्याय : अपशगुन लेने की मनाही 77

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................78

अध्याय : ज्योतिष विद्या के बारे में शरई दृष्टिकोण 80

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................80

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : नक्षत्रों के प्रभाव से वर्षा होने की धारणा रखने की मनाही 81

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................82

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्नण : {وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللهِ} (कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह का साझी औरों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं, जैसा प्रेम वे अल्लाह से करते हैं।) [सूरा बक़रा : 165}..84

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................85

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्नण : {إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلاَ تَخَـافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ} (वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उनसे न डरो तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।) [सूरा आल-ए-इमरान : 175]..87

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................88

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {وَعَلَى اللهِ فَتَوَكَّلُواْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ} (और तुम अपने रब पर भरोसा रखो, यदि तुम (वास्तव में) मोमिन हो।) [सूरा अल-माइदा : 23]......................89

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................90

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्नण : {أَفَأَمِنُواْ مَكْرَ اللهِ فَلاَ يَـأمَنْ مَكْـرَ اللـهِ إِلاَّ الْقَـوْمُ الْخَاسِرُونَ} (क्या वह अल्लाह की पकड़ से निश्चिन्त (निर्भय) हो गए ? सो अल्लाह की पकड़ से वही लोग निश्चिन्त होते हैं, जो घाटा उठाने वाले हैं।) [सूरा आराफ़ : 99]..91

इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................91

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : अल्लाह के निर्णयों पर धैर्य रखना
अल्लाह पर ईमान का अंश है 92
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................92
अध्याय : दिखावा (रिया) का वर्णन 94
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................94
अध्याय : इनसान का अपने अमल से दुनिया की चाहत
रखना भी शिर्क है 96
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................97
अध्याय : हलाल को हराम तथा हराम को हलाल करने
के मामले में उलेमा तथा शासकों की बात मानना
उन्हें अल्लाह के सिवा अपना रब बना लेना है ..98
इस अध्याय की मुख्य बातें :..........................99
अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का
वर्णन : {أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُواْ إِلَى الطَّاغُوتِ
وَقَدْ أُمِرُواْ أَن يَكْفُرُواْ بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلاَلاً
بَعِيدًا ((हे नबी !) क्या आपने उनको नहीं जाना , जिनका
यह दावा है कि जो कुछ आपपर अवतरित हुआ है तथा
जो कुछ आपसे पहले अवतरित हुआ है , उनपर ईमान
रखते हैं , किन्तु चाहते हैं कि अपने विवाद का
निर्णय तागूत के पास ले जाएँ , जबकि उन्हें
आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें ? और
शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर
कर दे। وإِذَا قِيلَ لهَم تَعَالَوا إِلَى مَا أَنزَلَ اللهُ وإِلَى الرَّسولِ
رَأيتَ المُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا तथा जब उनसे कहा
जाता है कि उस (क़ुरआन) की ओर आओ, जो अल्लाह ने
उतारा है , तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर, तो आप
मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि
वे आपसे मुँह फेर रहे हैं। فَكَيفَ إذا أَصَابَتهُم مُّصِيبةٌ

بما قَدَّمتْ أَيدِيهِمْ ثمَّ جَاءوكَ يَحْلِفونَ بِاللهِ إنْ أَرَدْنَا إلاَّ إحْسَانًا وتَوْفِيقًا} ... ...

किताबुत तौहीद
2

अध्याय : ज़माने को बुरा-भला कहना दरअसल अल्लाह को कष्ट देना है 112

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................112

अध्याय : काज़ी अल-कुज़ात (जजों का जज) आदि उपाधियों के संबंध में शरई दृष्टिकोण 113

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................113

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के नामों का सम्मान और इसके कारण नाम में परिवर्तन 114

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................114

अध्याय : अल्लाह, क़ुरआन या रसूल के ज़िक्र वाली किसी चीज़ का उपहास करना 115

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................116

अध्याय : उच्च एवं अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ولَئِن رُجِعتُ إلى رَبي إنَّ لي عِندَهُ لَلحُسنَى فَلَنُنَبِّئنَّ الَّذينَ كَفَرُوا بمَا عَمِلُوا ولَنُذِيقَنَّهُم مِن عَذَابٍ غَلِيظٍ} (और यदि हम उसे चखा दें अपनी दया, दुःख के पश्चात्, जो उसे पहुँचा हो, तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इसके योग्य ही था और मैं नहीं समझता कि क़यामत होनी है और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया, तो निश्चय ही मेरे लिए उसके पास भलाई होगी। तो हम अवश्य ही काफ़िरों को उनके कर्मों से अवगत कर देंगे तथा उन्हें अवश्य ही घोर यातना चखाएँगे।) [सूरा फ़ुस्सिलत : 50]..117

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................120

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلاَ لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالى اللهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ} (और जब उन दोनों को

किताबुत तौहीद
2

(अल्लाह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया ,
तो अल्लाह ने जो प्रदान किया , उसमें दूसरों को
उसका साझी बनाने लगे। तो अल्लाह इनके शिर्क की
बातों से बहुत ऊँचा है।) [सूरा आराफ़ : 190].121

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................122

अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का
वर्णन : {وَللهِ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الّذِينَ
يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ} (और अल्लाह के बेहद अच्छे नाम
हैं। अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो और उन
लोगों को छोड़ दो , जो उसके नामों के संबंध में
(इलहाद अर्थात) गलत रास्ता अपनाते हैं।) [सूरा
आराफ़ : 180]..123

इस अध्याय के मसायल :...................................123

अध्याय : "अल्लाह पर सलामती हो " कहने की मनाही
....124

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................124

अध्याय : "ऐ अल्लाह ! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़
कर दे !" कहने की मनाही 125

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................125

अध्याय : "عَبْدِي" (मेरा दास) तथा "أَمَتي" (मेरी
दासी) कहने की मनाही 126

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................126

अध्याय : अल्लाह का वास्ता देकर माँगने वाले
को खाली हाथ वापस न किया जाए 127

इस अध्याय के मसायल :...................................127

अध्याय : अल्लाह का का वास्ता देकर जन्नत के
सिवा कुछ न माँगा जाए 128

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................128

किताबुत तौहीद 2

अध्याय : किसी परेशानी के बाद "यदि " शब्द प्रयोग करने की मनाही 129
इस अध्याय की मुख्य बातें :.........................129
अध्याय : हवा तथा आँधी को गाली देने की मनाही 130
इस अध्याय की मुख्य बातें :.........................130
अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {يَظُنُّونَ بِاللهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الأَمْرِ مِن شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الأَمْرَ كُلَّهُ للهِ يُخْفُونَ فِي أنفُسِهِم مَا لا يُبدونَ لكَ يَقُولونَ لَو كانَ لنَا مِنَ الأمرِ شَيءٌ مَّا قُتِلنَا هَاهُنا قُل لَّو كُنتُمْ فِي بُيوتِكُم لَبَرزَ الَّذينَ كُتِبَ عليهِمُ القَتْلُ إِلَى مَضَاجِعِهِم ولِيَبتليَ اللهُ مَا فِي صُدُورِكُم ولِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُم وَاللهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ} (वे अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलियत की सोच सोच रहे थे। वे कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वे अपने मनों में जो छुपा रहे थे, आपको नहीं बता रहे थे। वे कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते। आप कह दें : यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिनके (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वे अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते और ताकि अल्लाह जो तुम्हारे सीनों में है, उसकी परीक्षा ले तथा जो तुम्हारे दिलों में है, उसकी जाँच करे और अल्लह दिलों के भेदों से अवगत है।) [सूरा आल-ए-इमरान : 154]................131
इस अध्याय की मुख्य बातें :.........................133
अध्याय : तक़दीर का इनकार करने वालों के बारे में शरई दृष्टिकोण 134

किताबुत तौहीद 2

इस अध्याय की मुख्य बातें :........................135
अध्याय : चित्र बनाने वालों के बारे में शरई दृष्टिकोण 136
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................136
अध्याय : अधिक क़सम खाने की मनाही 138
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................139
अध्याय : अल्लाह एवं उसके रसूल का संरक्षण देने का बयान 140
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................141
अध्याय : अल्लाह पर क़सम खाने की मनाही 142
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................142
अध्याय : अल्लाह को किसी के सामने सिफ़ारिशकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने की मनाही 143
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................143
अध्याय : इस बात का उल्लेख कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौहीद की सुरक्षा की एवं शिर्क तक ले जाने वाले हर रास्ते को बंद किया 144
इस अध्याय की मुख्य बातें :........................144
अध्याय : उच्च एवं महान अल्लाह के इस कथन का वर्णन : {وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالأَرْضُ جَمِيعـًا قَبْضَـتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَواتُ مَطْوِّيَاتٌ بِيَمِينِـهِ سُـبحَانَهُ وَتَعـالى عَمَّا يُشْرِكُونَ} (तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया , जैसे उसका सम्मान करना चाहिए था और क़यामत के दिन धरती पूरी उसकी एक मुट्ठी में होगी , तथा आकाश लपेटे हुए होंगे उसके दाहिने

किताबुत तौहीद
2

हाथ में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से ,
जो वे कर रहे हैं।) [सूरा ज़ुमर : 67]............146
इस अध्याय की मुख्य बातें :.........................148
विषय सूची 150